भण्डारण भारती

अंक–55

केन्द्रीय भण्डारण निगम

नए वर्ष में नई पहल हो।
कठिन ज़िंदगी और सरल हो।।

अनसुलझी जो रही पहेली।
अब शायद उसका भी हल हो।।

जो चलता है वक्त देखकर।
आगे जाकर वही सफल हो।।

नए वर्ष का उगता सूरज।
सबके लिए सुनहरा पल हो।।

समय हमारा साथ सदा दे।
कुछ ऐसी आगे हलचल हो।।

नए वर्ष में नई पहल हो।
कठिन ज़िंदगी और सरल हो।।

अक्टूबर-दिसम्बर - 2014

मुख्य संरक्षक
हरप्रीत सिंह
प्रबंध निदेशक

संरक्षक
जे.एस. कौशल
निदेशक (कार्मिक)

परामर्शदाता
पवन कांत
महाप्रबंधक (कार्मिक)

मुख्य संपादक
नम्रता बजाज
प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक
महिमानन्द भट्ट
वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

उप संपादक
रजनी सूद, रेखा दुबे

सहायक संपादक
प्रकाश चन्द्र मैठाणी

संपादन सहयोग
संतोष शर्मा, नीलम खुराना,
विजयपाल सिंह

केंद्रीय भण्डारण निगम
(भारत सरकार का उपक्रम)
4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रान्ति मार्ग, हौज खास,
नई दिल्ली-110016

यह पत्रिका निगम की वेबसाइट www.cewacor.nic.in पर भी उपलब्ध है।

मुद्रक: चन्दु प्रैस
डी-97, शकरपुर, दिल्ली-92
दूरभाष: 22526936

भण्डारण भारती

त्रैमासिक पत्रिका अंक-55

	विषय	पृष्ठ संख्या
✦	प्रबंध निदेशक की कलम से...	3
✦	सम्पादकीय	4
आलेख		
❍	नार्थ अमेरिका में हिंदी संबंधी गतिविधियां -सुभाष लखेड़ा	5
❍	राजभाषा हिंदी और कंप्यूटर -नम्रता बजाज	8
❍	हिंदी पत्रकारिता की जीवनगाथा एवं विकास यात्रा -महिमानन्द भट्ट	14
❍	राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की भाषा हिंदी -प्रकाश चन्द्र मैठाणी	25
❍	महात्मा ज्योतिबा फुले : सामाजिक उत्थान में योगदान -डॉ. मीना राजपूत	28
कविताएं		
✪	बेटियां -ए.के. शर्मा	7
✪	नियति -धीरेन्द्र नाथ शर्मा	11
✪	सरहद -देवराज सिंह देव	17
✪	अंतर्मन की आवाज़ -दिव्य खत्री	22
✪	हम किधर जा रहे हैं -एस. नारायण	26
✪	मैं और मेरी तन्हाई -जे.के. शर्मा	26
✪	एहसान इतना कर दो -नीलम खुराना	24
✪	मेरी हिंदी भाषा -यास्मीन सैयद	31
✪	आज मुझे एहसास हुआ -अरविंद सनत कुमार	31
विविध		
⅄	जिंदगी का सच्चा एहसास -प्रताप नरायन गर्ग	12
⅄	एक सफल प्रयास -आर.पी. शर्मा	13
⅄	खुशी -मीनाक्षी गंभीर	18
⅄	जीवन यात्रा -रुचि यादव	20
⅄	रावण की हंसी -डॉ. रवि शर्मा	21
⅄	धैर्य और व्यवहार -रेखा दुबे	23
अन्य गतिविधियां		
✶	नराकास के तत्वावधान में प्रतियोगिता का आयोजन	27
✶	सचित्र समाचार	32
✶	सचित्र गतिविधियां	33
✶	क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित हिंदी कार्यशाला	35
✶	खेल समाचार -राजीव विनायक	37
✶	निगम का तुलनात्मक कार्य निष्पादन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम	38
✶	सेवानिवृत्ति के अवसर पर	39

संपादक मंडल का लेखकों के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

केन्द्रीय भण्डारण निगम

लक्ष्य, दूरदर्शिता एवं उद्देश्य

लक्ष्य

सामाजिक दायित्वपूर्ण एवं पर्यावरण-अनुकूल ढंग से विश्वसनीय, किफायती, मूल्य संवर्द्धक तथा एकीकृत भण्डारण एवं लॉजिस्टिक्स समाधान सुलभ कराना।

दूरदर्शिता

हितधारी की संतुष्टि पर बल देते हुए भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था के सम्बल के रूप में एकीकृत भण्डारण अवसंरचना एवं अन्य लॉजिस्टिक सेवाएं प्रदान करने वाले बाजार के एक अग्रणी संसाधक के रूप में खड़ा होना।

उद्देश्य

- वैज्ञानिक भण्डारण एवं तत्संबंधी अवसंरचनात्मक सुविधाएं उपलब्ध कराते हुए कृषि, उद्योग, व्यापार व अन्य क्षेत्रों की परिवर्तनशील आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
- भण्डारण, हैण्डलिंग एवं वितरण के दौरान होने वाली हानियों को कम करना।
- पर्यावरण अनुकूल विधियां प्रयोग करते हुए पीड़क जन्तु-नियंत्रण सेवाओं के क्षेत्र में प्रमुख भूमिका निभाना।
- वेअरहाउसों में भण्डारित सामान के विरुद्ध बैंकिंग संस्थाओं एवं गैर-बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों के माध्यम से ऋण उपलब्ध कराने की दिशा में भण्डारण (विकास एवं विनियमन) अधिनियम, 2007 के क्रियान्वयन में सहयोग करना।
- पोर्ट हैण्डलिंग, प्रापण एवं वितरण, शीत श्रृंखला, भण्डारण वित्त पोषण, 3 पी.एल., परामर्शी सेवाएं, मल्टीमॉडल परिवहन आदि के क्षेत्रों में फारवर्ड और बैकवर्ड एकीकरण द्वारा लॉजिस्टिक्स मूल्य श्रृंखला की योजना बनाना और उनमें विविधता लाना।
- भण्डारण और संबंधित लॉजिस्टिक्स में वैश्विक उपस्थिति दर्ज करना।
- ग्राहक संतुष्टि हेतु कर्मचारियों की प्रतिबद्धता, अभिप्रेरणा और उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से मानव संसाधन विकास कार्यक्रम बनाना व क्रियान्वित करना।

प्रबंध निदेशक की कलम से...

नववर्ष 2015 का स्वागत करते हुए नए उमंग, उत्साह और संकल्प के साथ मैं ''भण्डारण भारती'' के माध्यम से निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों, उनके परिवारजनों तथा पत्रिका के प्रबुद्ध पाठकों को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ और उनके समृद्ध, सुखद एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। नववर्ष की इस पावन बेला पर हमें निगम की गत वर्ष की उपलब्धियों से प्रेरणा लेकर भविष्य में भी बेहतर कार्य करने के उत्साह का संकल्प लेकर आगे बढ़ना है। मेरा आप सभी से आग्रह है कि नववर्ष में आप नयी उमंग के साथ पूरी निष्ठा एवं समर्पण भाव से निगम को प्रगति के पथ पर आगे ले जाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहें।

जैसा कि आप जानते हैं कि निगम भारत सरकार का अनुसूची 'क' का मिनी रत्न श्रेणी–। उपक्रम है। यह निगम उचित लागत पर कृषि आदानों एवं उत्पाद तथा अधिसूचित वस्तुओं के वैज्ञानिक भंडारण के लिए सुविधाएं उपलब्ध करा रहा है। साथ ही निगम अपनी विभिन्न गतिविधियों के अलावा समाज के कल्याण के प्रति भी वचनबद्ध है। किसान विस्तार सेवा योजना के अधीन किसानों को प्रशिक्षण, भंडारण शुल्क में छूट तथा निगमित सामाजिक दायित्व के क्षेत्र में भी निगम अपनी उल्लेखनीय भूमिका अदा कर रहा है।

निगम की प्रत्येक गतिविधि में वृद्धि सुनिश्चित हो, इसके लिए कर्मचारियों के ज्ञान और कौशल को बढ़ाने हेतु विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। मुझे आशा है कि कर्मचारी इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का लाभ उठाकर लक्ष्यों के अनुरूप सकारात्मक परिणामों सहित निरंतर आगे बढ़ते रहेंगे।

निगम भंडारण के क्षेत्र में उत्कृष्टता लाने के साथ राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए संवैधानिक दायित्वों का पालन करने हेतु प्रतिबद्ध है। यह प्रसन्नता की बात है कि निगम द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक, हिंदी कार्यशाला, प्रशिक्षण एवं पत्रिका प्रकाशन संबंधी कार्य नियमित रूप से किए जा रहे हैं। निःसंदेह इस प्रकार के कार्यों से राजभाषा के प्रयोग को गति मिलती है। मुझे विश्वास है कि हम भविष्य में भी राजभाषा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए उल्लेखनीय परिणाम प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

नव वर्ष 2015 की पुनः हार्दिक मंगलकामनाओं सहित।

¼gjçhr flag½
çc/k funs'kd

संपादकीय

भण्डारण भारती का यह अंक विभिन्न गतिविधियों तथा निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सृजनात्मक लेखों के साथ प्रस्तुत है। कंप्यूटर के माध्यम से राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने, हिंदी पत्रकारिता जगत, जिंदगी और खुशी से जुड़े जैसे विषयों को शामिल करते हुए इस अंक को पठनीय एवं रोचक सामग्री के साथ प्रकाशित करना ही हमारा उद्देश्य रहा है। इस तिमाही में निगम को समझौता ज्ञापन लक्ष्यों की उपलब्धियों पर लगातार चौथी बार उत्कृष्ट रेटिंग संबंधी समाचार तथा अन्य गतिविधियों को पत्रिका में सचित्र प्रकाशित किया गया है। नराकास के तत्वावधान में विभिन्न सदस्य उपक्रमों के लिए आयोजित प्रतियोगिता की रिपोर्ट भी फोटोग्राफ सहित इस अंक में दी गई है।

निगम के विभिन्न क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा राजभाषा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से आयोजित हिंदी कार्यशाला की झलकियों को प्रमुखता के साथ प्रकाशित किया गया है। निगमित कार्यालय में पहली बार आयोजित टेबल टेनिस टूर्नामेंट की रिपोर्ट फोटोग्राफ सहित इस अंक में दी गई है जो खेलों को बढ़ावा देने के लिए एक उल्लेखनीय प्रयास है।

इस पत्रिका के माध्यम से सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आग्रह है कि वे राजभाषा की प्रगति के लिए अपना मार्गदर्शन एवं सहयोग निरन्तर प्रदान करें जिससे निगम सदैव अपने प्रमुख कार्यकलापों के साथ–साथ राजभाषा हिंदी के लिए सरकारी अपेक्षाओं को पूरा करते हुए अपने दायित्वों का भलीभांति निर्वाह कर सकें। इस अंक के संबंध में आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी ताकि आगामी अंकों को आपके सुझावों के अनुरूप प्रकाशित किया जा सके।

'भंडारण भारती' पत्रिका के सुधी पाठकों को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ।

¼ue|rk ctkt½
मुख्य संपादक

नार्थ अमेरिका में हिंदी संबंधी गतिविधियां

*सुभाष लखेड़ा

वर्ष 2012 का 2 दिसंबर का दिन मुझे जीवन भर इसलिए याद रहेगा कि इस दिन मुझे अमेरिका में हिंदी के प्रचार–प्रसार से जुड़े 'युवा हिंदी संस्थान' ने न्यू जर्सी में आयोजित अपने वार्षिक दिवस के अवसर पर 'हिंदी और विज्ञान' विषय पर बीज भाषण देने के लिए भी आमंत्रित किया था। उस समारोह में पद्मश्री डॉ. सुधीर पारेख, पेंसिलवेनिया यूनिवर्सिटी में हिंदी विभाग में सेवारत डॉ. विजय गंभीर और इस यूनिवर्सिटी के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष प्रोफेसर सुरेन्द्र गंभीर, देशी टाइम्स से जुड़े पत्रकार श्री अशोक ओझा, डॉ. बिन्देश्वरी अग्रवाल के अलावा अमेरिका में हिंदी के पठन–पाठन से जुड़े अन्य कई विद्वान भी मौजूद थे।

'युवा हिन्दी संस्थान' संभवतः अमेरिका में हिंदी के लिए समर्पित सबसे नवीनतम संस्था है। वर्ष 2009 में स्थापित इस संस्था के ज्यादातर सदस्य युवा हैं और ये लोग हिंदी के माध्यम से अमेरिका में बसे युवाओं में भारतीय संस्कृति और मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए प्रयासरत हैं। युवा हिन्दी संस्थान में हिंदी के शिक्षक, पत्रकार और विद्वानों के साथ–साथ हिंदी के प्रति लगाव रखने वाले कई युवा जुड़े हैं। पेनविश्वविद्यालय में हिंदी की एक कार्यशाला के दौरान इन युवाओं ने हिंदी के प्रचार के लिए एक संस्था के रूप में काम करने की बात सोची। इनका यही विचार युवा हिन्दी संस्थान के रूप में उभर कर आया। डॉ. सुरेन्द्र गंभीर की अगुवाई में संस्थान द्वारा हर साल हिंदी के लिए विशेष कक्षाएं लगाई जाती हैं।

यूं तो कमोबेश संयुक्त राज्य अमेरिका के सभी राज्यों में आपको ऐसे लोग मिल जायेंगे जो हिंदी के प्रचार – प्रसार के लिए कार्य कर रहे हैं किन्तु अमेरिका के कैलिफोर्निया राज्य में आपको ऐसे हिंदी प्रेमी बहुत बड़ी संख्या में मिलते हैं। वजह साफ है कि न्यू जर्सी के बाद यह एक ऐसा राज्य है जिसमें आपको भारतीय लोग बहुत बड़ी संख्या में मिलते हैं। सिलिकॉनवैली में हिंदी प्रेमी विभिन्न तरीकों से हिंदी के प्रचार – प्रसार में जुटे हैं। संयोगवश, मुझे 13 दिसंबर 2012 के दिन वहां मिलपिटस स्थित इंडिया कम्युनिटी सेंटर में ऐसे बहुत से लोगों से मिलने का मौका मिला जो हिंदी के प्रचार–प्रसार से विगत कई दशकों से जुड़े हैं। इनमें पहला नाम डॉ. श्याम नारायण शुक्ल है। डॉ. श्याम नारायण शुक्ल ने वर्ष 1957 में जबलपुर विश्वविद्यालय से बी. ई. (ऑनर्स) किया और फिर कनाडा से एम. एससी. (इंजीनियरिंग) और वर्ष 1968 में ओहायो स्टेट यूनिवर्सिटी से पीएचडी की उपाधि हासिल की। इंजीनीयरी के अलावा हिंदी साहित्य के क्षेत्र में उन्होंने अपना अमूल्य योगदान दिया है और वे विश्व हिंदी न्यास के माध्यम से हिंदी के प्रचार–प्रसार में अपना योगदान निरंतर दे रहे हैं। उनकी पत्नी निर्मला शुक्ला भी अमेरिका में हिंदी के प्रचार–प्रसार और कवि–सम्मेलनों के आयोजन में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं।

इसमें तीसरा नाम श्रीमती नीलू गुप्ता जी का है। नीलू गुप्ता जी वहाँ डि एन्जा कॉलेज कुपरटिनो में हिंदी की प्रोफेसर हैं। वे डॉ. अनिता कपूर के साथ सिलिकॉन वैली में हिंदी के प्रचार–प्रसार का कार्य करती हैं। डॉ. अनिता कैलिफोर्निया से प्रकाशित होने वाले मासिक हिंदी समाचार पत्र 'यादें' की प्रधान संपादक हैं और वे भारत सहित विश्व के कई देशों में हिंदी के प्रचार–प्रसार से जुड़े कार्यक्रमों में वे निरंतर शिरकत करती रहती हैं। इसके अलावा मुझे वहां डॉ. शकुंतला बहादुर, डॉ. पुष्पा गुप्ता, सुधा राणा, श्रीमती अंजना गुप्ता, मोहिंदर भल्ला आदि विदुषी महिलाओं से भी हिंदी से जुड़े सवालों पर सीधे बातचीत का मौका मिला। यूं मैं सपत्निक वहां जिस कार्यक्रम में गया था, वह एक विशुद्ध सांस्कृतिक कार्यक्रम था। इस कार्यक्रम के सभी कलाकार यहाँ रहने वाले वरिष्ठ भारतीय लोग थे और यह कार्यक्रम वरिष्ठ लोगों के लिए ही था। 'मेरा नाम राजू' और 'मेरे महबूब में क्या नहीं', जैसे गानों पर वरिष्ठ लोगों को थिरकते

* सी – 180, सिद्धार्थ कुंज, सेक्टर –7, प्लाट नंबर – 17, द्वारका, नई दिल्ली–110075

हुए देखने का लुत्फ़ उठाते हुए मुझे फिर महसूस हुआ कि अपनी सांस्कृतिक विरासत से सभी जुड़ा रहना चाहते हैं और डॉलर इस कमी को पूरा नहीं कर सकता। हाँ, इतना जरूर है कि इन डॉलरों की मदद से आप यहां अमरीकी शहरों में भी इंडिया कम्युनिटी सेंटर जैसे भव्य भवन बना सकते हैं जिसके स्वागत कक्ष की दीवारों पर भारत की सभी प्रमुख भाषाओं में स्वागतम लिखा हुआ है। मजेदार बात यह है कि यह पूरा कार्यक्रम हिंदी में था और इसमें भाग लेने वाले कलाकार और दर्शक, दोनों ही भारत के सभी क्षेत्रों से ताल्लुक रखते थे। मुझे लगता है कि भारत के बाहर जाकर हम सभी इस बात को समझने लगते हैं कि हिंदी भारत के लिए क्यों जरूरी है?

मैं यहाँ एक और बात का उल्लेख करना चाहूँगा। उस दिन जब हम मिलपिटस स्थित इंडिया कम्युनिटी सेण्टर के गेट पर पहुंचे तो अन्दर से एक युवा बुजुर्ग रमेश माथुर साहब हमसे बोले, ''आइये.. खरामा.. खरामा.. चले आइये।'' हमने एक–दूसरे का अभिवादन किया। बड़े मस्त नजर आये मुझे माथुर साहब और ऐसे ही कुछ और लोग यहां। हम लगभग यहां 4 घंटे रहे लेकिन मैंने किसी को बातचीत के दौरान बिना वजह एक भी अंग्रेजी का शब्द बोलते नहीं सुना। आंटी, अंकल जैसे शब्द भी न जाने कहां लुप्त हो गए थे। खैर, हम लोगों की हिंदी संगोष्ठी एक छोटे कक्ष में हुई। वे सभी लोग मुझे सुनना चाहते थे और मैं तो वहां सिर्फ यह बताने गया था कि हिंदी का उत्थान अब उन लोगों के हाथों में है जो विकसित देशों में हैं। इस बीच मुझे कुछ लोगों ने स्मृति चिह्न के रूप में स्वयं द्वारा रचित हिंदी पुस्तकें भी भेंट की। मैंने अपने 18–20 मिनट की बातचीत के दौरान भाषा से जुड़े उन पहलुओं पर चर्चा की जो किसी समुदाय के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए जरूरी हैं। यहां मैं यह जरूर कहना चाहूंगा कि वे सभी लोग यह चाहते हैं कि हिंदी का विकास तेजी से होना चाहिए और वे इसे यथा शीघ्र संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा के रूप में देखना चाहते हैं।

दरअसल, संयुक्त राज्य अमेरिका में हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए कई संस्थाएं कार्यरत हैं। इनमें अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति (International Hindi Association) एक प्रमुख संस्था है। इस समिति की स्थापना 33 वर्ष पूर्व 18 अक्टूबर 1980 की ऐतिहासिक संध्या पर वाशिंगटन क्षेत्र के कई गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति में वाशिंगटन डीसी में हिंदी के वरिष्ठ साहित्यकार कुंवर चन्द्र प्रकाश सिंह जी ने अपने अमेरिका प्रवास के दौरान की थी। यह अमेरिका की सबसे अधिक स्थायी संस्था हैं जिसने अमेरिका में हिंदी के मान–सम्मान एवं स्थापना के लिए अनेक सार्थक प्रयास किए हैं। कवि सम्मेलन का आयोजन, विश्वा का प्रकाशन, हिंदी समिति की अनेक नगरों में शाखाएँ स्थापित कराना, अनेक नगरों में गोष्ठियां आयोजित करना एवं अधिवेशनों का आयोजन करना हिंदी समिति की मुख्य गतिविधियां हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में हिंदी शिक्षण की स्थिति के सभी पक्षों में रुचि रखने वाले पाठक चाहें तो वे इन्टरनेट पर डॉ. सुरेन्द्र गंभीर के शोधपरक आलेख 'अमेरिका में हिंदी शिक्षण की लहर' को देख सकते हैं। डॉ. गंभीर लंबे समय से हिंदी के प्रचार–प्रसार से जुड़े हुए हैं और वे भारत में भी हिंदी संबंधी आयोजनों में अपना योगदान देते रहते हैं।

अमेरिका में रहते हुए हिंदी के प्रचार–प्रसार और उसके संवर्धन के लिए पिछले पांच दशकों से भी अधिक समय से काम करने वालों में न्यूयार्क स्टेट यूनिर्वसिटी से सेवानिवृत भौतिक विज्ञान के प्रतिष्ठित प्रोफेसर डॉ. राम चौधरी का नाम उल्लेखनीय है। उन्होंने अमेरिका में रहते हुए हिंदी में विज्ञान लेखन को बढ़ावा देने के लिए अनेकानेक कार्य किये हैं। 'विश्व हिंदी न्यास समिति' के माध्यम से डॉ. चौधरी ने हिंदी जगत, हिंदी बालजगत और विज्ञान प्रकाश (त्रैमासिक) जैसी पत्रिकाओं की नींव रखी। हिंदी को लेकर लिखे उनके कुछ सारगर्भित लेख इन्टरनेट पर भी उपलब्ध हैं। जहाँ तक हिंदी साहित्यकारों का सवाल है, अमेरिकी विश्वविद्यालयों में सेवारत कई स्वनामधन्य भारतीय लेखक/लेखिकाएं इस दिशा में अपना अमूल्य योगदान वर्षों से दे रही हैं। उन सभी का नाम यहां देने का अर्थ होगा– लेख को अनावश्यक रूप से विस्तार देना। यूं ऐसे सभी हिंदी सेवी विद्वानों की रचनाएं विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। अमेरिका के बहुत से नगरों में हिंदी पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन भी हो रहा है। अन्यथा, कर्मभूमि, ई –विश्वा, प्रवासी टुडे और पुरवाई इनमें कुछ प्रमुख नाम हैं।

यहाँ एक और नाम का उल्लेख करना उचित होगा। संयुक्त राज्य अमेरिका में हिंदी के प्रचार–प्रसार से जुड़ा एक प्रमुख नाम डॉ. सुधा ओम ढींगरा है। वे अमेरिकी राज्य नॉर्थ कैरोलिना के हिंदी विकास मंडल के न्यास मंडल में हैं। अंतरराष्ट्रीय हिन्दी समिति (अमेरिका) के कवि सम्मेलनों की राष्ट्रीय संयोजक

हैं। 'प्रथम' शिक्षण संस्थान की कार्यकारिणी सदस्या एवं उत्पीड़ित नारियों की सहायक संस्था 'विभूति' की सलाहकार हैं। उन्होंने अमेरिका में हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए अनेक कार्य किए हैं– हिन्दी पाठशालाएँ खोलने से ले कर यूनिवर्सिटी में हिंदी पढ़ाई है। इंडिया आर्ट्स ग्रुप की स्थापना कर हिंदी के बहुत से नाटकों का मंचन कर लोगों को हिंदी भाषा के प्रति प्रोत्साहित कर अमेरिका में हिंदी भाषा की गरिमा को बढ़ाया है। अनगिनत कवि सम्मेलनों का सफल संयोजन एवं संचालन किया है।

नॉर्थ अमेरिका का दूसरा बड़ा देश कनाडा है। कनाडा में हिंदी की स्थिति का अनुमान इस तथ्य से लगा सकते हैं कि वहां इस समय तीन पत्रिकाएं प्रयास (मासिक), हिंदी चेतना और वसुधा (दोनों त्रैमासिक) तथा पांच हिंदी समाचार पत्र छपते हैं। हिंदी चेतना का प्रकाशन तो कनाडा की हिंदी प्रचारिणी सभा वर्ष 1998 से कर रही है। प्रयास पत्रिका विश्व हिंदी संस्थान, कनाडा प्रकाशित करता है। इसके अतिरिक्त यह संस्था लंबे समय से हिंदी सेवा में संलग्न हिंदी कवियों तथा साहित्यकारों को "आजीवन हिंदी सेवा सम्मान" द्वारा सम्मानित करती है। वसुधा पत्रिका कनाडा के टोरंटो शहर से प्रकाशित होती है। यह पत्रिका संस्थागत पत्रिका न होकर हिंदी कवियत्री श्रीमती स्नेह ठाकुर के हिंदी के प्रति प्रेम और समर्पण की परिचायक है।

लेख के समापन से पूर्व मैं यहाँ अपना एक अनुभव जरूर बताना चाहता हूँ। विगत वर्षों में अपने दीर्घावधि वाले विदेश प्रवासों के दौरान मैंने वहां कहीं भी हिंदी को बोलने को लेकर वैसी कोई झिझक नहीं देखी जैसी कुछ खास परिस्थितियों में अपने देश में देखी है। मुझे तो बरमूडा द्वीप तक में हिंदी को गौरव से इस्तेमाल करने वाले लोग मिले। कुल मिलाकर, एक जमाना था जब भारत से अमेरिका आने वाला जय किशन 'जैक्सन' बनने को बेताब प्रतीत होता था लेकिन बदलती हुई स्थितियों में अब यह जैक्सन वापस जय किशन बनने के लिए प्रयत्नशील प्रतीत हो रहा है। इतना ही नहीं, अब नॉर्थ अमेरिका में रहने वाले लोग हिंदी शिक्षण के माध्यम से अपने बच्चों को अपनी संस्कृति, परम्पराओं और जीवन मूल्यों से परिचित कराने के लिए कोशिश कर रहे हैं। यह गौरव का विषय है कि आज के भारतीय अमेरिकी हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए सिर्फ अपना समय ही नहीं अपितु आर्थिक योगदान भी दे रहे हैं।

बेटियां

xxk teuh rgthc l

* ए.के. शर्मा

ये रात ये चांद ये सितारे, कभी हो न सके तुम्हारे,
पल–पल जन्म से ही उसको कोसा और आत्मा को रौंदा।

न पकड़ाई कभी उसको मशाल–ऐ–तरक्की की,
घर की चार दीवारी में उस को इज़्जत की खातिर रोका।

ऐ दीन वालों रब के बन्दों, तनिक यह तो सोचो,
यदि सावित्री न होती तो सत्यवान का क्या होता।

जीजाबाई ही शिवाजी को गढ़ पाई है,
बेटियों से ही दुनिया का वजूद और रहनुमाई है।

बेटियों की कद्र जिस दिन से हो जाएगी,
जन्नत धरा पर समाहित हो जाएगी।

धन्य हैं वह लोग जिन्होंने बेटियों को सम्मान दिया,
तभी तो लांबा ने गणतंत्र पर भारत को मान दिया।

अंतरिक्ष को उन्होंने अपने कदमों तले नापा है,
पाताल की गहराइयों को भी उन्होंने मापा है।

इसलिए ऐ नादानों! कोख में इनका न वध करो तुम,
जीने का इनको उतना ही हक और हकूक दो तुम।।

* महाप्रबंधक (क्रय), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

राजभाषा हिन्दी और कम्प्यूटर

*नम्रता बजाज

भाषा एक ऐसा माध्यम है जिससे मनुष्य अपने विचारों को सहज ही प्रकट कर पाता है। भाषा के माध्यम से वह अपने विचारों का आदान–प्रदान करता है। प्रत्येक मनुष्य अपने जन्म से देश, क्षेत्र आदि में प्रचलित भाषा को ही अपनाता है। भारतवर्ष में हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो न केवल समूचे भारतवर्ष में अपितु विदशों में भी बहुतायत मात्रा में बोली जाती है। हिन्दी की लिपि देवनागरी है और इसकी विशेषता है, उसकी ध्वन्यात्मकता। जो लिपि ध्वनि यंत्र पर आधारित हो तथा 'ध्वन्यात्मक' हो, वही सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि मानी जाती है। देवनागरी की वर्णमाला ध्वनि की दृष्टि से अति वैज्ञानिक है अर्थात् पहले स्वर, फिर व्यंजनों का विभाजन, उस पर स्वरों का ह्रस्व व दीर्घ रूप, मूल स्वर तथा संयुक्त स्वरों का विभाजन तक वैज्ञानिक है।

लगभग पिछले एक हजार साल से हिंदी इस देश की संपर्क भाषा रही है। अमीर खुसरो, कबीर, गुरु नानक, गुरु गोविंद सिंह, मुगल शहजादा दारा, स्वामी दयानन्द, महात्मा गांधी, श्री जवाहर लाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल, श्री सुभाष चन्द्र बोस और आचार्य विनोबा भावे जैसे महापुरुषों ने अपनी देशव्यापी राष्ट्रीय कार्रवाईयों के लिए हिंदी को अपनाया था। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने तो हिंदी के ही माध्यम से स्वदेशी आंदोलन का संचालन किया। गांधी जी इसे हिंदुस्तानी कहकर पुकारना पसंद करते थे। वे चाहते थे कि सभी भारतवासी अपनी प्रादेशिक कार्रवाईयां अपनी–अपनी भाषाओं में करें और राष्ट्रीय कार्रवाईयों की भाषा हिंदी हो। उन्होंने कहा था, ''राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है''। ''हिन्दी हमारी मातृभाषा है, मात्र भाषा नहीं।'' भारत में हिंदी एक भाषा मात्र न होकर भारतीय अंतस की गहन संवेदनाओं का नाम है। हिंदी उस मिठास का नाम है जिसका आस्वादन कानों से किया जाता है। तमिल के महान कवि सुब्रहमण्य भारती हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन के सबसे बड़े कवियों में से एक माने जाते हैं। इन्होंने सन् 1906 में ''इंडिया'' नामक पत्रिका में लिखा था – ''भारत विभिन्न क्षेत्रों का देश है, सभी क्षेत्रों की अलग–अलग भाषाएं हैं, लेकिन पूरे भारत के लिए एक आम भाषा (कॉमन लैंग्वेज) आवश्यक है।'' इस प्रकार भारती जी ने एक संपर्क भाषा के रूप में हिंदी को अपनाने का सुझाव दिया था। दक्षिण भारत में हिंदी कक्षाएं चलाने की परम्परा की शुरूआत राष्ट्र कवि सुब्रहमण्य भारती की प्रेरणा पर हुई थी। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, सरदार वल्लभ भाई पटेल और आचार्य विनोबा भावे ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हिंदी को देश की प्रमुख राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा और राजभाषा के रूप में अपनाने के लिए अपने–अपने ढंग से उद्‌गार प्रकट किए थे। हमारा कर्तव्य है कि हम इन सभी महापुरुषों की भावनाओं को याद रखें और हिंदी को देश की संपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा और राजभाषा के रूप में अपनाएं।

jk t Hkk"kk fgUnh

14 सितंबर, 1949 को भारतीय संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदी भाषा को अखण्ड भारत की प्रशासनिक भाषा के तौर पर राजभाषा का दर्जा दिया था। यही वजह है कि हर वर्ष 14 सितंबर हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार हिंदी संघ की राजभाषा है। यह जनता और प्रशासन के बीच संपर्क का एक सशक्त और प्रभावी माध्यम है। हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो समस्त भारतीय जनता को एकता के सूत्र में जोड़ने की कड़ी का काम करती है। सरकार की नीति राजभाषा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन और परस्पर सहयोग से बढ़ावा देने की है। राजभाषा नियम और उसके अधीन बनाए गए नियमों को कार्यान्वित करने

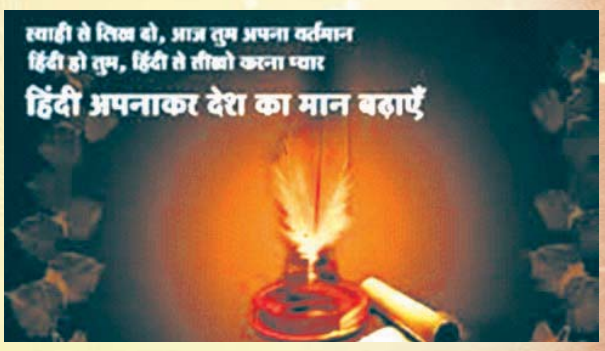

* प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

और हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने की जिम्मेदारी हम सभी पर है। संविधान में देश की सभी क्षेत्रीय भाषाओं को राज्यों की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। सभी राज्यों की भाषाएं हमारी राष्ट्रभाषाएं हैं और हिंदी देश की प्रमुख राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा है। यह जनता और प्रशासन के बीच संपर्क का एक सशक्त और प्रभावी माध्यम है।

हिन्दी भाषा के विकास के लिए अनुच्छेद 351 में दिया गया है कि संघ का यह कर्त्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो, वहां उसके शब्द–भण्डार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे। भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में कुल 22 भाषाएँ हैं, यथा–1. असमिया, 2. उड़िया, 3. उर्दू, 4. कन्नड़, 5. कश्मीरी, 6. गुजराती, 7. तमिल, 8. तेलुगु, 9. पंजाबी, 10. बंगला, 11. मराठी, 12. मलयालम, 13. संस्कृत, 14. सिन्धी, 15. हिन्दी, 16. मणिपुरी, 17. नैपाली, 18. कोंकणी, 19. मैथिली, 20. संथाली, 21. बोडो तथा 22. डोगरी। इनके अतिरिक्त भी बहुत–सी भाषाएं एवं बोलियां हमारे देश में बोली और समझी जाती हैं, इसीलिए भारत जैसे बहुभाषी देश में भाषाओं के महत्ता को देखते हुए अनेक स्तर पर संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी के शिक्षण और प्रसार के महत्त्व को सर्वमान्य समझा गया है। किन्तु यह विडंबना ही है कि केवल सितंबर माह में हिन्दी दिवस/हिन्दी पखवाड़ा/हिन्दी माह मनाकर ही हम अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं। 14 सितंबर मात्र एक दिन नहीं है बल्कि यह वह दिन है जब हिन्दी ने हम भारतीयों को एक–दूसरे से जोड़ा किन्तु ऐसा क्या हुआ कि इसके लिए हमें एक विशेष दिन समर्पित करना पड़ रहा है? आज देश की राजभाषा स्वयं अपने अस्तित्व की तलाश कर रही है। आज समाज में बदलाव की जरूरत है जो सर्वप्रथम स्कूलों और शैक्षिक संस्थानों से होनी चाहिए और देश के कार्यालयों में भी केवल हिन्दी पखवाड़ा मनाकर ही इतिश्री नहीं करनी चाहिए अपितु प्रत्येक दिन ही हिन्दी को व्यावहारिक और कार्यालय की भाषा बनाना चाहिए। इसके लिए आवश्यकता इस बात की है कि हम समय के साथ चलें और इसी क्रम में हिन्दी को विकास पथ पर ले जाने के लिए इसे सूचना प्रौद्योगिकी के साथ जोड़ा जाना एक सशक्त प्रयास है।

dEI;Vj

वैश्वीकरण के इस दौर में कम्प्यूटर मूलभूत आवश्यकता बन गया है। प्रत्येक क्षेत्र में कम्प्यूटर का प्रयोग किया जा रहा है। इसका उपयोग अब सूचना व संप्रेषण के साथ–साथ पुस्तक प्रकाशन, अनुवाद व शिक्षण के लिए भी किया जा रहा है। विज्ञापनों में, मनोरंजन के क्षेत्र में कंप्यूटर ने क्रांति ला दी है। बैंकों, रेलवे स्टेशनों, कार्यालयों, हवाई अड्डों, मौसम की जानकारी, चिकित्सा जगत हर स्थान पर कंप्यूटर मदद करता है। यहाँ तक कि युद्ध संचालन में भी यह काम आता है। कहने का तात्पर्य यह है कि आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कंप्यूटर का उपयोग महत्वपूर्ण है। कंप्यूटर का उपयोग केवल अंकीय गणना के लिए ही नहीं अपितु भाषा के संश्लेषण और विश्लेषण के लिए भी किया जा रहा है। इसकी महता को देखते हुए आज सभी के लिए इसकी जानकारी प्राप्त करना तथा इसका प्रयोग सीखना आवश्यक होता जा रहा है। इसके प्रशिक्षण की सुविधाएँ आज विद्यालयों, कॉलेजों तथा अनेक निजी संस्थानों में उपलब्ध है। हिन्दी भाषा के विकास में गति लाने के लिए भी कम्प्यूटर के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। कम्प्यूटर द्वारा हिन्दी भाषा व देवनागरी लिपि का प्रयोग आज भारत में ही नहीं विदेशों में भी अध्ययन–अध्यापन व शोध का विषय बन चुका है।

वास्तव में 'कम्प्यूटर' शब्द 'कम्प्यूट' (Compute) से बना है जिसका अर्थ होता है 'गणना करना'। इस आधार पर कम्प्यूटर गणना करने वाला एक यंत्र कहा जा सकता है जो किसी भी प्रकार की गणना कर सकता है चाहे वह गणितीय हो या तर्कसंगत। सामान्यतः कम्प्यूटर सैन्ट्रल प्रोसेसिंग यूनिट (सीपीयू) तथा मेमोरी से बना है। वर्ष 1940 तथा 1945 के बीच पहला इलैक्ट्रॉनिक डिजीटल कम्प्यूटर बनाया गया था। समय के साथ–साथ कम्प्यूटर का विकास हुआ और आज हम आर्टिफिशीयल इंटैलिजैंस तकनीक (Artificial Intelligence technology) के साथ अत्याधुनिक कम्प्यूटरों का उपयोग कर रहे हैं जो मनुष्य के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सहायता कर रहा है। हमारे जीवन में कम्प्यूटर के आने से विश्व भर की सूचनाएं प्राप्त करना कहीं अधिक आसान हो गया है। इंटरनेट की सहायता से न केवल हमें विभिन्न प्रकार की सूचनाएं प्राप्त होती हैं अपितु इस भाग–दौड़ वाली ज़िंदगी में हम अपने मित्रों और परिवार के साथ भी जुड़े रहते हैं।

इसी प्रकार कम्प्यूटर नेटवर्क, संचार माध्यमों द्वारा कम्प्यूटरों तथा अन्य संबंधित उपकरणों के समूल को परस्पर जोड़ता है, जिसके कारण नेटवर्क अंगों द्वारा साथ–साथ कार्य किया जाता है। इसके माध्यम से सूचनाओं का आदान–प्रदान सरलता से हो जाता है। वर्तमान में प्रायः तीन प्रकार के सूचना नेटवर्क का प्रयोग किया जाता है, यथा–लोकल एरिया नेटवर्क (LAN), मैट्रोपॉलिटन एरिया नेटवर्क (MAN) तथा वाइड एरिया नेटवर्क (WAN)।

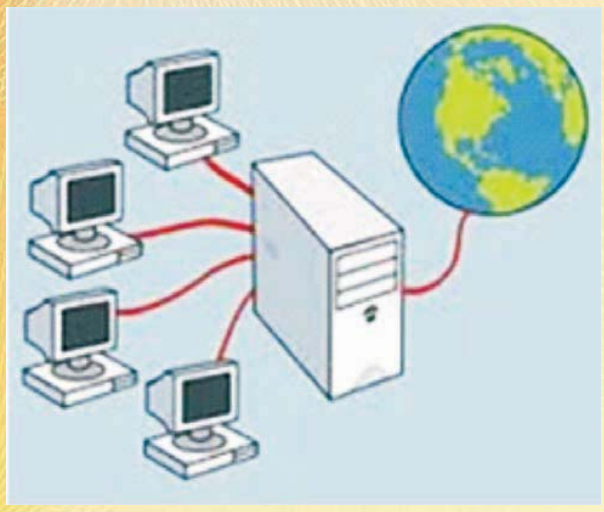

fgUnh Hkk"kk vkj dEI;Vj

इसी श्रृंखला में हिन्दी के क्षेत्र में भी कम्प्यूटर का प्रयोग बढ़ा है। हिन्दी में कार्य करने के लिए कई फोन्ट जैसे कृति देव, नारद, शिवा इत्यादि तथा अनेक सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं, परन्तु हिन्दी में ईमेल इत्यादि करते समय जब ईमेल संदेश दूसरे व्यक्ति को प्राप्त होता है तो कई बार वह उन्हें सही रूप में प्राप्त नहीं होता क्योंकि विभिन्न सॉफ्टवेयरों में प्रयुक्त फोन्ट कम्पैटिबल नहीं हो पाते। इससे कम्प्यूटर पर हिन्दी में ईमेल इत्यादि करने और हिन्दी की फाइल को एक कम्प्यूटर से दूसरे कम्प्यूटर पर ट्रांसफर करने में कठिनाई आती है। अतः भारत सरकार ने अपने अधीनस्थ सभी कार्यालयों में यूनिकोड फोन्ट का प्रयोग करने के निदेश जारी किए और यूनिकोड एनकोडिंग को मान्यता दी। यूनिकोड (मंगल फोन्ट) स्टेन्डर्ड यूनिवर्सल करैक्टर सेट है जिसकी सहायता से कम्प्यूटर पर अंग्रेजी की तरह ही हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में आसानी से सभी कार्य किए जा सकते हैं। मंगल हिन्दी (देवनागरी लिपि) के लिए एक ओपनटाइप यूनिकोड फॉन्ट है जो विंडोज़ ऑपरेटिंग सिस्टम का डिफॉल्ट हिन्दी फॉन्ट है। यह यूज़र इंटरफेस फॉन्ट के तौर पर डिज़ाइन किया गया है। यूनिकोड को हम आसानी से इंस्टाल करके प्रयोग कर सकते हैं। इसे राजभाषा विभाग की साइट http://rajbhasha.gov.in या www.bhashaindia.com पर जाकर इंस्टाल किया जा सकता है। यूनिकोड मंगल को इंस्टाल करने के बाद हम अपनी सुविधानुसार टाइपराइटर भी सैट कर सकते हैं। इनके अतिरिक्त भाषा तकनीकी में विकसित उपकरणों को जनसामान्य तक पहुँचाने हेतु भारत सरकार के सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के प्रावधान के अंतर्गत भी www.ildc.gov.in तथा www.ildc.in वेबसाइटों के द्वारा व्यवस्था की गई है जिसके तहत शब्द संसाधक, वर्तनी संशोधक, कोड परिवर्तक, ट्रांसलिटरेशन, शब्दकोश, मैसेंजर, ओ सी आर, ओपन

ऑफिस, ब्राउज़र, कॉर्पोरा मुख्य तौर पर दिए गए हैं। इनके अतिरिक्त अन्य संसाधन हैं–डेस्क टॉप प्रकाशन, इंटरनेट पर ब्राउजिंग, इंटरनेट, टेलीकॉन्फ्रेंसिंग, पेजिंग, सेल्युलर सुविधा, ई–मेल, सेटेलाइट फोन सेवा, फैक्स, मशीनी अनुवाद, टैलेक्स प्रणाली, श्रुतलेखन सॉफ्टवेयर इत्यादि।

अब तो ऐसी तकनीक विकसित हो गई है कि यदि आपको हिन्दी और अंग्रेजी की टाइपिंग नहीं आती और आप कुछ टाइप करना चाहते हैं तो बस माइक्रोफोन पर बोलते जाइए और कम्प्यूटर आपके बोले गए शब्दों को लिखित रूप में रिकार्ड कर लेगा। अंग्रेजी बोल कर टाइप करने वाला सॉफ्टवेयर तो पहले से ही उपलब्ध था। अब हिन्दी में भी 'हिन्दी डिक्टेशन एंड पीसी कंट्रोल' नामक सॉफ्टवेयर विकसित कर लिया गया है। यह सॉफ्टवेयर भारतीय लहजे में बोली गई हिन्दी ग्रहण करने में सक्षम है। यदि किसी को अंग्रेजी टाइपिंग आती है और हिंदी टाइपिंग नहीं आती तो वह www.bhashaindia.com पर जाकर Microsoft indic language input tool डाउनलोड कर सकता है। इससे वह जब अंग्रेजी में टाइप करेगा तो कम्प्यूटर पर

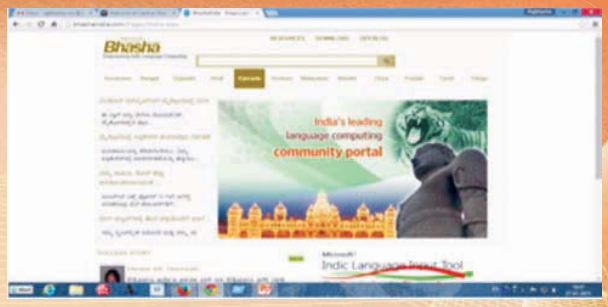

देवनागरी में लिख कर आएगा। जैसे यदि 'मेरा भारत' लिखना है तो लिखना होगा Mera Bharat। ऐसे ही गूगल ट्रांसलेशन के माध्यम अंग्रेजी–हिंदी, हिंदी–अंग्रेजी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद भी किया जा सकता है परंतु गूगल से अनुवाद करते समय ध्यान रखना ज़रूरी होता है कि अर्थ का अनर्थ न हो और इसके लिए ज़रूरी है कि आप अनुवाद के लिए सही शब्द का चयन करें।

पिछले कुछ दशकों में हिंदी के क्षेत्र में कंप्यूटर के प्रयोग से उल्लेखनीय प्रगति हुई है। यद्यपि इस क्षेत्र में किए गए प्रयत्न भी सफल हुए हैं, तथापि अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है।

नियति

*धीरेन्द्र नाथ शर्मा

घुल रहा है जहर, धमनियों में मेरी।
जी रहा हूँ फकत, मौत की आस में।।
तुमने देखा है क्या, एक हँसता चमन।
हमको मिल भी न पाएगा, दो गज कफन।।
कैसी मीठी सुरीली, हवा थी चली।
एक पल में मनुष्यों को संग ले चली।।
सोच कर संग हुए उसके आगोश में।
और विदा हो गए इस जगत कोश से।।
हमने देखा था सहमा हुआ सूर्य भी।
प्रातः की लालिमा, कालिमा थी बनी।।
किस कदर आँसुओं का समन्दर बहा।
मौत के चक्र से कुछ बचा न रहा।।
जो बचा लाश का एक अंबार था।
नियति का चक्र किसको न स्वीकार था।।
नियति का चक्र किसको न स्वीकार था।।
(भोपाल गैस त्रासदी की विभीषिका से व्यथित होकर लिखी गई रचना)

* अधीक्षक, क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल

जो राष्ट्र का हित वही व्यक्ति का हित और जो राष्ट्र का कर्तव्य वही व्यक्ति का कर्तव्य – यह भावना जिस दिन प्रत्येक व्यक्ति में जाग्रत हो जाएगी, वह देश के लिए बड़ा ही सुदिन होगा।

– लोकमान्य तिलक

जिन्दगी का सच्चा अहसास

*प्रताप नरायन गर्ग

यह उस समय की घटना है, जब मेरी जिन्दगी भगवान की कृपा से सही प्रकार से अपने रोजाना के कार्यों को करती हुई गुज़र रही थी। किसी प्रकार की कोई भी परेशानी का अहसास नहीं था क्योंकि सभी कार्य समय पर तथा सही तरीके से हो रहे थे एवं स्वास्थ्य भी ठीक था।

एक दिन अचानक मेरी तबीयत खराब हो गई। डॉक्टरों से काफी इलाज कराने के पश्चात भी तबीयत ठीक नहीं हो पा रही थी जिसके कारण बहुत परेशानी थी तथा कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। तब पहली बार मुझे अहसास हुआ कि ज़िन्दगी भी क्या चीज़ है, कभी तो बहुत अच्छी और कभी बहुत खराब। ऐसा लगता था कि अब जीने की कोई तमन्ना ही न हो क्योंकि डॉक्टरों ने अस्पताल में भर्ती होने व ऑपरेशन कराने के लिए बोल दिया था। चूंकि ऑपरेशन काफी बड़ा था, इसलिए मुझे बहुत डर लगता था।

पहले तो मैंने सोचा कि क्यों न दवाइयों का प्रयोग करके मैं ठीक हो जाऊं और ऑपरेशन न करवाऊं। अतः मैंने दवाइयों का प्रयोग करके कुछ दिनों के लिए ऑपरेशन को टाल तो दिया परन्तु इसी दौरान मेरी तबीयत ज्यादा खराब हो गई और मैं उदास रहने लगा तथा सोचने लगा कि अब जिन्दा भी रहूंगा या नहीं।

अचानक एक दिन मेरे एक दोस्त मुझे देखने के लिए मेरे घर आए। वो मेरी हालत देखकर बोले कि ''तुम उदास क्यों रहते हो, यह तो जिन्दगी की सच्चाई है, इससे क्यों मुंह फेरते हो क्योंकि जिन्दगी में गम भी मिलते हैं, समझौता गमों से कर लो।'' तुम ठीक हो जाओगे और उन्होंने मुझे तुरन्त अस्पताल में भर्ती होने व ऑपरेशन करवाने की सलाह दी। जैसा कि डॉक्टरों ने कहा था, उसी तरह उन्होंने भी कहा कि तुम हमेशा खुश रहना सीखो, जैसे भी रहो, खुश रहो, यदि तुम रोओगे तो कोई तुम्हारा साथ नहीं देगा और यदि तुम हंसोगे तो हर व्यक्ति तुम्हारा साथ देगा। ये बात कहकर मेरे दोस्त मुझे ये दुआ देकर वापस चले गए कि :

[kf'k;k fey vkidk gj ne]
xe dk dHkh vglkl u gk]
nvk gekjh g cl bruh]
vki dHkh mnkl u gkA

उस दिन मुझे जिन्दगी का सच्चा अहसास हुआ और मैं अपने दोस्त की सलाह पर खुश रहने लगा और ऑपरेशन कराने के लिए अस्पताल में भर्ती हो गया कि ''जिन्दगी हंसने–गाने के लिए है दो पल, इसे खोना नहीं, खोकर रोना नहीं, जिन्दगी तो है जिन्दगी''।

भगवान की कृपा से मेरा आपरेशन सही हो गया और कुछ समय के बाद मैं अस्पताल से ठीक होकर अपने घर वापस आ गया और बिल्कुल स्वस्थ हो गया । तब मुझे अपनी गलती का अहसास हुआ कि मैं कितना गलत और नकारात्मक सोचता था। हमेशा सकारात्मक सोचना चाहिए क्योंकि सकारात्मक सोच हमें अच्छी दिशा की तरफ ले जाती है और नकारात्मक सोच हमें दुखी बनाती है और दूसरों को भी। घटनाओं को हम बदल नहीं सकते हैं और न ही तथ्यों को बदल सकते हैं लेकिन अपने देखने के तथा अहसास करने के तरीके को अवश्य बदल सकते हैं।

मुझे अब इस बात का पूर्ण अहसास हो गया था कि ज़िन्दगी बहुत ही अच्छी है, यदि इसे सही तरह से जीया जाए क्योंकि सच ही कहा गया है कि ज़िन्दगी एक सफर है सुहाना, यहां कल क्या हो, किसने जाना।

ज़िन्दगी जीने के लिए हमारी सोच गलत हो सकती है जिसको बदलने की कला हमें आनी चाहिए क्योंकि किसी ने सच ही कहा है ज़िन्दगी ज़िन्दादिली का नाम है, मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते हैं।

* सहायक महाप्रबंधक (वित्त), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

एक सफल प्रयास

*आर.पी. शर्मा

यह बात उस समय की है, जब मैं सेन्ट्रल वेअरहाउस, सोनीपत–। में भंडारण प्रबंधक के पद पर तैनात था। एक दिन मैं किसी कार्यवश सोनीपत–।। वेअरहाउस में गया हुआ था। वहां कार्यालय में मेरी मुलाकात श्री गुप्ता जी, जो सोनीपत–।। के गोदाम के मालिक थे, के साथ एक अन्य व्यक्ति से हुई।

चूकिं मेरा उन महाशय से कोई पूर्व परिचय नहीं था, तथापि बातों–बातों में उन्होंने कहा कि मुरथल स्थित बियर फैक्ट्री में विदेश से बीयर की खाली बोतलों के कंटेनर आते हैं, परन्तु उनके भंडारण की व्यवस्था नहीं हो पा रही है क्योंकि फैक्ट्री में न तो इतना स्थान है और न ही उतारने की सुविधा।

मेरे मन में एक विचार आया कि क्यों न मैं ही यह प्रयास करूं कि खाद्यान्न, उर्वरक भंडारण के अलावा भी किसी अन्य वस्तु के भंडारण की कोशिश की जाय। उस समय केन्द्र की भंडारण उपयोगिता की स्थिति भी बहुत अच्छी नहीं थी।

तभी मैंने उन महाशय को सोनीपत–। वेअरहाउस में आकर इस संबंध में आगे बातचीत एवं भंडारण की संभावना तलाश करने का निमन्त्रण दिया। करीब एक हफ्ते पश्चात् मुरथल बियर फैक्ट्री के प्रबन्ध अधिकारियों ने केन्द्र का दौरा किया एवं पाया कि उनके अनुसार चाही गई भंडारण क्षमता इस केन्द्र में उपलब्ध हो सकती है।

स्थानीय स्तर पर व क्षेत्रीय कार्यालय, पंचकुला के स्तर पर आरक्षण एवं भंडारण शुल्क संबंधी प्रक्रिया पूरी की गई एवं दो गोदाम जिनकी क्षमता करीब 2600 टन थी, उनको एरिया बेसिस से आबंटित किए गए।

इसी दौरान जमाकर्ता से कंटेनर की लम्बाई, गोदाम के समक्ष खड़े होने की स्थिति एवं सबसे महत्वपूर्ण उसमें रखे हुए बियर के पैलेट्स को उतारने संबंधी अधिक से अधिक जानकारी एकत्र की गई। बताया गया

कि एक पैलेट 8'x4'x2½' साइज का होता है जिसमें करीब 1800 खाली बोतलें प्लास्टिक (पोलीथीन) से रैप की गई होती है और जिन्हें केवल मजदूरों द्वारा उतारा नहीं जा सकता है।

कंटेनरों के सोनीपत पहुंचने से पूर्व ही फोर्क लिफ्टर इत्यादि की व्यवस्था की गई। तद्नुसार क्षेत्रीय प्रबंधक, पंचकुला को सूचित किया गया। सभी व्यवस्थाएं अपनी ओर से पूरी होते देख सारा स्टाफ काफी खुश था, परन्तु असली समस्या तो अभी आनी बाकी थी।

जैसे ही कंटेनर से पैलेट्स को उतार कर फोर्क लिफ्टर ने गोदाम के अन्दर ले जाना चाहा, वह गेट में ही अटक गया। कांच की बोतलें थीं, इस कारण जोर–जबरदस्ती नहीं की जा सकती थी।

अतः क्षेत्रीय प्रबंधक महोदय से अनुमति लेकर गोदाम के शटर को निकाला गया और गेट को ऊंचा एवं बड़ा किया गया। उसके पश्चात् कंटेनर से पैलेट्स उतार कर भंडारित किया जाने लागा।

इस तरह से पारम्परिक भंडारण के अतिरिक्त अन्य अपारम्परिक वस्तु का भंडारण करने में सैंट्रल वेअरहाउस सोनीपत–। सफल रहा। इस सफलता का श्रेय वेअरहाउस के सभी कर्मचारियों की मेहनत एवं क्षेत्रीय प्रबंधक पंचकुला को जाता है। यह एक ऐसा कार्य था जिसके लिए सभी के साथ मेरा प्रयास सफल रहा।

* प्रबंधक (आई.आर.) निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

हिन्दी पत्रकारिता की जीवन गाथा एवं विकास यात्रा

*महिमानन्द भट्ट

यह निर्विवाद सत्य है कि पत्रकारिता आज से ही नहीं बल्कि प्राचीन काल से किसी न किसी रूप में मानव सभ्यता से जुड़ी हुई है। यहां तक कि जिस जमाने में कागज की व्यवस्था नहीं थी, उस युग में भी शिलालेखों, सभाओं, समितियों आदि के माध्यम से जनता अपनी राय प्रकट करती थी तथा घोषणाएं होती थीं। धार्मिक ग्रंथों में भी महर्षि नारद एक विशेष संवाददाता की तरह स्थल मार्ग को न अपनाकर आकाश मार्ग से भ्रमण करते थे और एक राजा से दूसरे राजा तक खबरें पहुंचाते थे। नारद मुनि की यह भूमिका उन्हें आदि–पत्रकार सिद्ध करती है। इसके बाद की राजतंत्र शासन व्यवस्था में भी खबरों को राजा तक तथा राजा के संदेशों को सीमा तक भेजना पत्रकारिता का एक हिस्सा ही था। महाभारत में भी संजय की भूमिका एक रिपोर्टर की थी जो धृतराष्ट्र को युद्ध–स्थल की घटित सम्पूर्ण घटनाओं की जानकारी देते थे। उस काल में जनसाधारण को अपनी ओर आकर्षित करके भी सूचनाओं की घोषणाएं की जाती थीं। धीरे–धीरे स्थिति और परिस्थिति में बदलाव आता गया और पत्रकारिता ने समय के साथ–साथ अपना रूप बदला। भारतीय पत्रकारिता के विकास और प्रसार में हिंदी पत्रकारिता का योगदान सर्वाधिक है।

पत्रकारिता अर्थात् जर्नलिज़्म एक रोचक एवं ज्ञानवर्धक विषय है। वास्तव में इस विषय के बारे में जितना पढ़ा और लिखा जाए कम है अर्थात् इसका क्षेत्र विशाल से विशालतम है। यह समाज का आईना और पथ–प्रदर्शक है। पत्रकारिता मनुष्य की आस्थाओं, विचारों एवं मूल्यों को सही रूप में जनता के सामने

डेली हिन्दी मिलाप

ज्वार अनुसंधान निदेशालय में हिन्दी कार्यशाला आयोजित

दैनिक जागरण

'ईमानदारी से करें काम, स्वयं बढ़ेगा राष्ट्र'

रखती है। साहित्यिक–कलात्मक रुझान को बढ़ाना, नैतिक–धार्मिक मूल्यों की प्रतिष्ठा करना, भौतिकवादी दुनिया को सही मार्ग दिखाना, सुखी जीवन के द्वार खोलना ही पत्रकारिता का लक्ष्य है। दरअसल पत्रकारिता समसामयिक इतिहास है, जो रोज लिखा जाता है। दैनिक घटने वाली घटनाओं को जल्द से जल्द और स्पष्ट रूप में जनता के सामने लाना पत्रकारिता है। यह घटना सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक आदि किसी भी क्षेत्र की हो सकती है। रहस्य को उजागर करना पत्रकारिता की धड़कन है। पत्रकारिता सामाजिक जीवन के सच–झूठ, दृश्य–अदृश्य और अच्छी–बुरी छवियों को, घटनाओं को दिखाने का आईना है। निःसंदेह पिछले कुछ वर्षों से श्रव्य एवं दृश्य संचार माध्यमों ने पत्रकारिता के छिपे व्यक्तित्व को बहुआयामी, पेचीदा, जटिल तथा सबसे अधिक चुनौती भरा बना दिया है। उपग्रहों के आधार पर विकसित तकनीकों ने तो टेलीविजन पत्रकारिता को इतना समृद्ध और व्यापक बना दिया है कि यह प्रिंट मीडिया के सामने एक चुनौती बन गया है। आज जनसंचार माध्यमों के घर–घर में स्थापित होने के कारण यह युग सूचनाओं के विस्फोट का युग बन गया है।

यदि पत्रकारिता के पिछले इतिहास पर संक्षिप्त रूप में दृष्टि डालें तो हम देखेंगे कि भारत में पत्रकारिता की औपचारिक शुरुआत कलकत्ता से हुई। पहला भारतीय समाचार–पत्र (अंग्रेजी में) 29 जनवरी, 1780 को 'बंगाल गजट अथवा कलकत्ता एडवरटाइजर' जेम्स हिक्की ने निकाला। यह अखबार जनसामान्य में हिकी–गजट के

* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा) निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

नाम से प्रसिद्ध हुआ था। हिकी ने पहला अखबार निकालकर भारतीय पत्रकारिता की सही भूमिका की तरफ भी संकेत किया। उसके बाद दूसरा 'दि इण्डियन गजट' प्रारंभ हुआ, तत्पश्चात कलकत्ता गजट, ओरियण्टल गजट आदि अनेक पत्र निकले। जहां तक हिंदी पत्रों के प्रकाशन की बात है– सबसे पहला हिंदी साप्ताहिक समाचार–पत्र 'उदंत मार्तण्ड' वर्ष 1826 में प्रकाशित हुआ। दूसरा पत्र 'बंगदूत' प्रकाशित होने के बाद हिंदी समाचार–पत्रों का सिलसिला आगे बढ़ता रहा। उर्दू का 'पयामेआजादी' पत्र भी श्री अज्जीमुल्लाखां ने उसी दौरान निकाला। आजादी के संघर्ष में महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में प्रकाशित होने वाले समाचार–पत्रों ने अकबर इलाहाबादी के इस कथन को शिरोधार्य किया–

^[khpk u dekuk dk] u ryokj fudkykA
tc rki eqdkfcy gk] rk v[kckj fudkykAA

वर्ष 1920 के उपरांत जब अनेक पत्र निकले तो उनके प्रथम पृष्ठ पर आजादी की मशाल जलाने वाली देशभक्ति की कविताएं भी प्रकाशित होती थीं। आज़ादी के बाद समाचार–पत्रों के हर पहलू में परिवर्तन आया और उसके आयाम भी विस्तृत हुए। दैनिक 'हिंदुस्तान' का प्रकाशन भी वर्ष 1936 में शुरू हुआ तथा अप्रैल, 1947 में दैनिक हिंदी 'नवभारत' निकला जो बाद में 'नवभारत टाइम्स' में परिणत हो गया। इन समाचार–पत्रों को आज भी बड़े चाव से पढ़ा जाता है।

किसी भी भाषा को सम्पन्न बनाने में पत्रकारिता जितनी सहायक बनती है, उतनी अन्य कोई कला नहीं। पत्रकारिता एक कला है जो कल्पवृक्ष की भांति है। पत्रकारिता की कला इतिहास का निर्माण करती है। वह स्वयं कभी इतिहास नहीं बन सकती, इतिहास भूतकाल

दैनिक सवेरा टाइम्स
अंधेरे से उजाले की ओर...

अनेक बीमारियों को खत्म करता है गाय का दूध

का होता है और पत्रकारिता बराबर वर्तमान में जीती है। पत्रकारिता ऐसे धर्म या समुदाय का निर्माण करने में समर्थ होती है जिसमें किसी के प्रति किसी का विद्वेष नहीं रहता।

पत्रकारिता मानव जीवन के किसी भी पहलू को छोड़ती नहीं है और हर क्षेत्र को प्रभावित करने तथा संवारने का प्रयास करती है किन्तु यह एक ऐसी कला है जो वैयक्तिक न होकर सामूहिक होती है, अन्य किसी कला में ऐसी बात नहीं है। जैसे– वाल्मिकी ने रामायण लिखी और उसका प्रभाव लोगों के जीवन पर पड़ा या आज तक पड़ता जा रहा है तो इसका एकमात्र श्रेय वाल्मिकी को मिल रहा है और मिलना भी चाहिए। इसी प्रकार वेदव्यास ने महाभारत लिखा और गीता लोगों के जीवन तथा आचरण को प्रभावित कर रही है तो इसका श्रेय भी व्यासजी को ही मिल रहा है, किसी अन्य को नहीं। अतः चाहे विज्ञान हो, साहित्य या अन्य कोई कला, वह वैयक्तिक इस अर्थ में होती है कि उसकी उपयोगिता का श्रेय उसके रचनाकार को ही मिलता है, जबकि पत्रकारिता के साथ यह बात नहीं है। पत्रकारिता की कला का श्रेय एक विद्या को नहीं मिलकर पूरी पत्रकारिता को जाता है जिसने देश या समाज में इसके अनुकूल वातावरण का निर्माण किया।

नेशनल दुनिया

विशेष प्रार्थना सभा में देखा उल्लास

मेरठ। शांति निकेतन विद्यापीठ के प्रांगण में हिन्दी दिवस के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसका प्रारम्भ कक्षा 9 के छात्र अंश एंव जईम के हास्य कविता पाठ द्वारा किया गया। कक्षा 7 की छात्राओं ने चैपाई गायन एंव कक्षा 10 की छात्राएं अपूर्वा एंव नंदिनी, मानिक जैन, जसवंत, श्रुतिका ने काव्य मंचन द्वारा सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। विनीता, पूनम, नीलकमल ने हिन्दी की महत्ता विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये। प्रधानाचार्य ने हिन्दी भाषा का महत्व बताते हुए बच्चों का मार्गदर्शन किया एंव कार्यक्रम की सराहना करते हुए हिन्दी दिवस की शुभ कामनाएं दीं।

पत्रकारिता एक श्रव्य कला भी है और दृश्य कला भी और इसका मुख्य आधार है– प्रचार। भाषा और साहित्य के निर्माण और विकास में पत्रकारिता का महत्वपूर्ण योगदान है। हिंदी भाषा ने भारतीय पत्रकारिता को भारतीयता का स्वरूप दिया है। हिंदी भाषा ने पत्रकारिता को ही सरल नहीं बनाया अपितु अंग्रेजी पत्रों को भी अपना इंगलिस्तानी स्वरूप बदलकर हिन्दुस्तानी स्वरूप अपनाने तथा सरल और सहज शैली में लिखने के लिए विवश किया। पत्रकारिता का भी अपना धर्म और

जागरण सिटी
लुधिर
जागो, उठो और बचाओ पानी
हरनामपुरा में हजारों लोगों ने लिया पानी बचाने का संकल्प

दर्शन होता है। एक शब्द में पत्रकारिता को कर्तव्य कहा जा सकता है– स्वयं के प्रति कर्त्तव्य और जिसके लिए लिखा जाता है उसके प्रति कर्तव्य। भाषा पत्रकारिता को अपने साथ लेकर चलती है किन्तु पत्रकारिता की अपनी भाषा भी होती है। यह भाषा गद्य की होती है, पद्य की नहीं। पत्रकारिता कल्पना को स्वीकार नहीं करती। कल्पित बातें, भाव या विचार पत्रकारिता की सीमा में नहीं आते। साहित्य और काव्य की तरह वह आकाश या कल्पनालोक की सैर कभी नहीं करती। वह ठोस धरती पर रहती है और ठोस धरती की व्यावहारिक बातें भी करती है। पत्रकारिता पाठक को प्रभावित करना चाहती है, प्रसन्न करना नहीं। वह अपने पाठकों से वाहवाही की अपेक्षा नहीं करती।

पत्रकारिता भाषा की दरिद्रता में नहीं, सम्पन्नता में पनपती और सफल होती है। यह भाषा और गद्य को सरल और सम्पन्न बनाती है। पत्रकारिता शब्दों की अर्थ–शक्ति पर ध्यान देती है अर्थात् उपयुक्त शब्द न होने पर नये शब्दों का निर्माण या आयात करके भाषा को सम्पन्न बनाती है। पत्रकारिता न तो भूतकाल और न ही भविष्य की चिन्ता करती है। यह काम वह इतिहास पर छोड़ देती है, उसे तो वर्तमान से ही संबंध रहता है। वह वर्तमान में जीती है और उसी को प्रकाश में लाती है। पत्रकारिता प्रमाणिकता पर आधारित होती है, इसका अपना साहित्य होता है और अपना दर्शन भी। यह एक ऐसी कला है जिसकी सफलता इसकी गति पर निर्भर करती है। जिस प्रकार हर कला की किसी वस्तु को देखने की अपनी दृष्टि होती है उसी प्रकार पत्रकारिता की भी अपनी अलग दृष्टि होती है। पत्रकारिता को शीघ्रता से लिखा जाने वाला साहित्य भी कहा गया है। (Journalism is the literature in hurry)। अतः पत्रकारिता को समाज का दर्पण कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

पत्रकारिता की दृष्टि बहुत व्यापक होती है। इसकी दृष्टि गुणों की ओर भी जाती है और दोष तथा त्रुटियों की ओर भी। कहा जाता है 'जहां न जाए रवि वहां जाए कवि' अर्थात् कवि की कल्पना सूर्य और उसके प्रकाश की पहुंच से की जाती है। यह बात कवियों के साथ–साथ पत्रकारों पर भी पूर्णतः चरितार्थ होती है। पत्रकारिता में कठोर अनुशासन का पालन अनिवार्य होता है। पत्रकारिता किसी पर आश्रित नहीं रहती और आश्रित रहकर पनप भी नहीं सकती। पत्रकारिता देशहित या राष्ट्रहित अथवा समस्त पाठक वर्ग के हित की दृष्टि से लोकमत का निर्माण और संस्कार करती है। यह एक ऐसी कला है जिसका अभ्यास एकांत में नहीं किया जा सकता। साहित्य, काव्य, संगीत ये सभी कलाएं अभ्यास के लिए एकांत और एकाग्रता की अपेक्षा रखती हैं पर पत्रकारिता एक ऐसी कला है जो भीड़ में ही पनपती और फलती–फूलती है।

NBT
नवभारत टाइम्स
बच्चों ने दिया सुरक्षित दिवाली का संदेश

निःसंदेह पत्रकारिता अब पत्रों और पत्रिकाओं तक ही सीमित नहीं रह गई है यह अब रेडियो, टी.वी. आदि जनसंचार के माध्यमों में भी प्रवेश कर चुकी है। आज पत्रकारिता एक मिशन न होकर उद्यम बन गई है। आधुनिक संचार साधनों ने पत्रकारिता को एक नई दिशा प्रदान की है। पत्रकारिता की जीवन गाथा एवं विकास का सफर बहुत बड़ा है। इतना ही कहना काफी होगा कि भारतीय पत्रकारिता ने बदलती परिस्थिति के अनुकूल खुद को काफी बदला है और व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा के युग में कदम रखकर उसमें बदलाव होने की प्रक्रिया अब और तेजी से जारी है।

सरहद

*देवराज सिंह 'देव'

सरहदों पर कांटे नहीं,
गुलशन खिलाना सीख लो।
ये हिंद, वो पाक है,
भेद मिटाना सीख लो।।

गिरा दो उन दीवारों को,
बढ़ता जिनसे बैर है।
सरहदों पर प्यार का,
उपवन खिलाना सीख लो।।

बांट गए जो देश अखण्डता,
हिन्दुस्तां और पाक में।
देश के उन दुश्मनों से,
सज़ग रहना सीख लो।।

सरहद के उस पार भी,
और सरहद के इस पार भी।
भाईचारा प्रेम की,
ज्योति जलाना सीख लो।।

फैला गए जो घृणा जग में,
जाति, धर्म के नाम पर।
मिटा दो उस कलंक को,
अब भाईचारा सीख लो।।

आज जो वो पाक है,
कल हिस्सा था वो हिन्द का।
हिस्सेदारी जोड़ कर,
जय हिन्द कहना सीख लो।।

प्यारी कीमत नही है,
दुनियां के बाजारों में।
सरहदों पर प्यार का,
दरिया बहाना सीख लो।।

तोड़ दो उन जंजीरो को
जकड़ा जिनमें प्यार है।
प्यार का मधुबन दिलों में,
फिर, खिलाना सीख लो।।

धरती माँ भी रोती है,
चलती हैं जब गोलियां।
दुश्मनी को छोड़ कर,
होली मनाना सीख लो।।

हृदय तो रोता इधर है,
हृदय भी रोता है उधर।
तोड़ कर सब बंधनों को,
खुशियां मनाना सीख लो।।

बीज नफ़रत के बोए जो,
धरती माँ की कोख़ में।
कोख़ तो शर्माना सीख लो।।

घर बंटा, आंगन बंटा,
क्या बंट गए दिल प्यार के।
ये तो झगड़ा घर–घर है,
बस, वतन बचाना सीख लो।।

भाई का दुश्मन है भाई,
कब तलक चलेगी दुश्मनी।
दोस्ती कर दुश्मनी को,
दूर करना सीख लो।।

खूनों की दरियां बहीं,
और मिट्टी भी थर्रायी थी।
उजड़ा हुआ चमन है,
फिर, से बसाना सीख लो।।

''देव'' तो लिखता सदा,
प्यार के पैगाम को।
नफ़रतों को त्याग कर,
गुलशन खिलाना सीख लो।।

सरहदों पर कांटे नही,
गुलशन खिलाना सीख लो।

* न्यू डिफेन्स कॉलोनी, मुराद नगर, जिला–गाजियाबाद

खुशी

*मीनाक्षी गंभीर

[k'kh dgk g \
og iy tc lkjh nfu;k glhu utj vk;]
lc vkj 'kkfr ,o lEiUurk fn[kkb n]
Hkhrj l flQ vkj flQ nvk, gh fudy]
fdlh Hkh xyrh dk ekQ dj nu e
fgpfdpkgV u gk]
lc dN yVk nu dh bPNk djA

शाम का समय था, न जाने क्यों मन बहुत बोझिल–सा हो रहा था, भारी मन से उठ कर रसोईघर में जा कर अपने लिए एक कप चाय बनाई और रेडियो एफ. एम लगा कर वापिस आकर कुर्सी पर बैठ कर धीरे–धीरे चाय पीने लगी। चाय की चुस्कियों के साथ–साथ संगीत में खो जाना चाहती थी कि एक पुराने भूले–बिसरे गीत ने दिल में हलचल मचा दी, "घर से चले थे हम तो खुशी की तलाश में, गम राह में खड़े थे वहीं साथ हो लिए।" कभी खुशी, कभी गम, कहीं सुख और कहीं दुःख, इन्हीं दोनों रास्तों पर हर इंसान की ज़िंदगी की गाड़ी चलती रहती है, कुछ ही पल खुशी के और बाकी दुःख को झेलते हुए खुशी की तलाश में निकल जाते हैं। अपनी ही विचारधारा में खो–सी गई थी, क्या तलाश करने पर किसी को भी खुशी मिली है कभी, शायद नही, खुशी तो अपने अंदर से ही उठती है। हर छोटी–बड़ी उपलब्धि से हमारे जीवन में अनंत खुशियों का आगमन होता है, चाहे हम अपनी मनपसंद वस्तु की खरीदारी करें यां फिर हमारी किसी इच्छा की पूर्ति हो, अगर हमारी कोई अभिलाषा पूरी नहीं हो पाती तो हमें क्रोध आता है, आक्रोश पनपता है और हम निराशा एवं अपार दुःख में डूब जाते हैं। वह इसलिए कि जैसा हम चाहते हैं, वैसा हमें मिल नहीं पाता, ऐसी परिस्थितियों से कोई उभर कर ऊपर उठ जाए या आशा–निराशा में सामंजस्य स्थापित कर सके तो हमारा दामन सदा खुशियों से भरा रह पाएगा। अपने अंतर्मन की ऐसी आवाज सुन कर अनायास ही मुख से निकल पड़ा "नहीं नहीं", यह तो बहुत ही मुश्किल है। जब हम उदास होते हैं तब तो हम और भी अधिक उदासी एवं निराशा में डूबते चले जाते हैं। उन भारी पलों में हमारी विचारधारा, हमारी सोच केवल हमारी इच्छा की आपूर्ति न होने के कारण उसी के इर्द–गिर्द घड़ी की सुई की तरह घूमती रहती है। इन्ही पलों में अगर हम अपनी विचारधारा को एक खूबसूरत दिशा की ओर मोड़ दें तो जैसे जलधारा को नई दिशा मिलने के कारण बाढ़ जैसी स्थिति को बचाया जा सकता है। ठीक वैसे ही विचारों के प्रवाह की दिशा बदलने से हम निराशा की बाढ़ में डूबने से बच सकते हैं।

हमारी जिंदगी में अनेकों छोटी–छोटी खुशियों के पल आते हैं, क्यों न हम उन्हें संजो कर रख लें? जब भी वह पल हमें याद आयेंगे, हमारा मन प्रफुल्लित हो उठेगा। फिर क्यों न हम अपने इस जीवन में हरेक पल का आनंद लेते हुए इसे जियें? जो बीत चुका सो बीत चुका, आने वाले पल का कोई भरोसा नहीं, तो क्यों न हम इस पल को भरपूर जियें? इस पल में हम कुछ ऐसा करें जिससे हमें खुशी मिले, आनंद मिले। जो कुछ भी हमें ईश्वर ने दिया है, क्यों न उसके लिए प्रभु को धन्यवाद करते हुए, उसका उपभोग करें। हमारे अंदर ही वो जादुई शक्ति मौजूद है कि हम जो चाहे हासिल कर सकते हैं! यह सब हमारे हाथ में है। खुशी, संतुष्टि और आनंद सब हमारे भीतर ही छुपा हुआ है, सिर्फ जरूरत है उसे ढूंढ निकालने की। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कौन हैं और किस अवस्था में हैं, यदि हम चाहें तो सकारात्मक सोच से खुशी को अपने अंदर ही महसूस कर सकते हैं।

कुछ लोग सोचते हैं कि यदि मुझे ये मिल जाए या मुझे वो हासिल हो जाए तो मैं खुश हो जाऊंगा। लेकिन ऐसे व्यक्ति कभी भी खुश नहीं रह सकते जो अपने वर्तमान से असंतुष्ट हैं और सदैव भविष्य में ही अपनी खुशियां तलाश करते रहते हैं। जरूरत है तो केवल एक सकारात्मक रवैया अपनाने की और आप हमेशा संतुष्टि का अनुभव कर सकते हैं। कहीं भविष्य में खुशियां ढूढंने

* वरिष्ठ निजी सहायक, निदेशक (कार्मिक) कार्यालय

के चक्कर में आप अपना वर्तमान उदास और दुखी मन से ना गुजार दें। शायद आपको विश्वास नहीं होगा पर यह सच है कि जैसा रवैया आप दूसरों के लिए अपनाते हैं वो आप को भी कहीं ना कहीं प्रभावित करता है। जो चीज आपको अच्छी लगती है वो उन्हें भी अच्छी लगेगी, जो बात आपको बुरी महसूस होती है वो उन्हें भी होगी। अपने व्यवहार में थोड़ा–सा बदलाव आपको ढेरों खुशियां दे सकता है क्योंकि आपका आंतरिक दृष्टिकोण ही आपके अंदर सच्चे मायने में खुशी की भावना का एहसास कराता है।

जो हमेशा नकारात्मक सोच लेकर चलते हैं वो कभी भी सच्ची खुशी का आनंद नहीं उठा सकते हैं क्योंकि वो चाहे कुछ भी हासिल कर लें उन्हे हमेशा और अधिक पाने की इच्छा रहेगी और वो असंतुष्ट ही रहेंगे। वो केवल उदासीनता को ही अपनी ओर आकर्षित करते हैं। उन्हें इस बात का एहसास भी नहीं होता और वो अपने नकारात्मक नज़रिये के कारण मिलती हुई खुशी को भी नज़रअंदाज कर देते हैं। आप जैसा सोचते हैं और जैसा व्यवहार करते हैं वो घूम कर आपके पास ही वापस आता है। क्या खुशियों को आकर्षित किया जा सकता है? क्या दुख खिंचा चला आ सकता है? दोनों सवालों का जवाब हाँ ही है। दूसरों के साथ खुशियां बांटने से आप खुद के अंदर खुशी को महसूस कर सकते हैं। आप मानें या ना मानें पर यदि आप दूसरों की बुरी लगने वाली बातों को नज़रअंदाज कर दें और सिर्फ यह सोचें कि मैं दुनिया का सबसे खुशनसीब इंसान हूँ तो आप चाहे कुछ हो जाए, सदैव खुश रहेंगे। केवल एक सकारात्मक सोच अपनाने की आवश्यकता है। अपनी स्वार्थी इच्छाओं का त्याग कर दें और यह सोचना छोड़ दें कि आप ही सब कुछ हैं और फिर देखें कि आपके इस जरा से बदलाव ने आपकी पूरी ज़िंदगी को ही बदल डाला है। खुशियां तो आपकी ओर आकर्षित हुए बिना रह ही नहीं सकती हैं, क्योंकि आपके भीतर महसूस होने वाली खुशी के लिए आपका मन ही जिम्मेदार है। तो आज से आनंद उठाना शुरू कर दें इस जादूई शक्ति का, बस अपने जीवन में एक सकारात्मक नजरिया अपना कर!

कहीं एक वीडियो देखा था– 'खुशी', आप सब के साथ उसको बाँटना चाहती हूँ। "एक दिन यूँ ही बैठी थी, इंतज़ार कर रही थी किसी का, एक बड़ी सी खुशी का, घर पर पकवान बनाये, दीवारें पेंट कीं, बहुत तैयारियां कीं, बहुत बड़ी खुशी आने वाली थी ना। फिर अचानक दस्तक हुई, मैंने पूछा कौन है, आवाज़ आई – मैं खुशी – थोड़ी छोटी हूँ, वो नहीं जिसका तुम्हे इंतज़ार है पर खुशी हूँ। मैंने बोला थोड़ा इंतज़ार करो, कुछ काम कर रही हूँ, इंतज़ाम कर रही हूँ, बड़ी खुशी आने वाली है ना। वो बोली ठीक है और फिर मैं अपने काम में मसरूफ हो गयी भूल, ही गई कि कोई दरवाजे पर खड़ा था। फिर से एक दस्तक हुई, खुशी बोली अब तो आने दो, इतना इंतज़ार कर लिया, दहलीज तो पार करवा दो, चाहे घर में जगह न देना, अरे अंदर तो आने दो, चाहे स्वीकार न करना। मैं खीज कर बोली, तुम परेशांन बहुत करती हो। तुम एक काम करो, बाद में आना, मुझे बड़ी खुशी के स्वागत की तैयारी करनी है। छोटी खुशी बोली – अरे! मैं तो दिन में कई बार आती हूँ, तुम्हीं दरवाजा नहीं खोलतीं। अब नहीं आऊंगी, कहते हुए वो पैर पटकते हुए बच्चों की तरह चली गई। कई बरस बीत गए, बड़ी खुशी नहीं आई। पकवान ख़राब हो गए, दीवारों का रंग फीका पड़ गया, दिल जैसे तरस गया उसके इंतजार में, पर वो नहीं आई। फिर एक दिन सपनों में मिली, उस बड़ी खुशी से पूछा मैंने – तुम मेरे घर क्यों नहीं आईं? मैंने तो खूब तैयारी की थी तुम्हारे आने की, घर सजाया, पकवान बनाये, कितने सपने सजाये थे। वो बोली अरे! तुमने मुझे पहचाना नहीं? आई थी कई बार, पर तब शायद मेरा कद थोड़ा छोटा था। तुमने आने नहीं दिया, परन्तु किसी और ने खुली बाहों से अपनाया और देखो आज कितनी बड़ी हो गई हूँ। सुनते ही मानो मेरे पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई, पसीने–पसीने हो गयी और भाग के दरवाजा खोला, देखने के लिए कि क्या कोई है, कोई छोटी खुशी आई है मेरे दरवाजे पर। पर कोई नहीं था। आज मेरा दिल और दरवाजा दोनों खुले हैं पर कोई दस्तक नहीं करता, कोई दहलीज पार करने की जिद नहीं करता।" तो दोस्तों याद रखें बड़ी–बड़ी खुशियों के चक्कर में छोटी–छोटी खुशियों को न भूल जाएँ क्योंकि इन्ही छोटी–छोटी खुशियों से एक दिन बड़ी खुशी बनती है।

"सुकून मिलता है दो लफ्ज कागज पर उतारकर,
कह भी देती हूँ और आवाज भी नही होती।"

जीवन यात्रा

*रुचि यादव

एक देश था, बहुत चर्चे थे उसके दूर–दूर तक। सुना था कि उससे सुंदर, हरा–भरा और असंख्य सुविधाओं से परिपूर्ण कोई और देश नहीं था उस दुनिया में। सबकी तमन्ना होती थी कि जीवन में बस एक बार उस देश का भ्रमण कर आयें, कैसे भी बस एक मौका मिल जाए। एक बार, लम्बे इंतज़ार और हजारों प्रार्थनाओं के बाद कुछ विद्वानों के एक समूह को मौका मिला उस देश के भ्रमण का। सभी बहुत उत्साहित थे अपनी यात्रा को लेकर। शर्त यह थी कि सभी लोग एक साथ एक बस में बैठेंगे तथा यह बस पूरे देश का भ्रमण करायेगी। निर्धारित समय पर उस अद्भुत देश की यात्रा आरम्भ हुई।

शुरू में तो सबकी आँखे खुली की खुली रह गयीं। इतना खुबसूरत देश, जितना सुना था उससे कहीं ज्यादा सुंदर। बड़े–बड़े पहाड़, गीत गाती नदियाँ, लहलहाते खेत, जगह–जगह फूलों की घाटियाँ, अति सौम्य एवं सहज यहाँ के लोग। यात्रीगण बहुत उत्साह और उमंग से भरे यात्रा का आनंद ले रहे थे कि किसी एक विद्वान ने कोई राजनीतिक प्रसंग छेड़ दिया। चूँकि सभी अपने–अपने क्षेत्रों के प्रकांड विद्वान थे। अतः सभी अपना मत उस विषय पर रखने लगे। सभी की बुद्धि भरी हुयी थी मतों से, विचारों से, बहसों से। सभी विद्वान बोल रहे थे पर एक–दूसरे की सुन कोई नहीं रहा था। अन्य देशों से आये कई दूसरे लोग मूकदर्शक बन कर बैठे थे और ये देख रहे थे कि किसका मत ज्यादा तर्कशील है, कौन ज्यादा जानता है, कौन हवा में बोल रहा है और किसकी बात में कितना दम है।

और इसी बहस के दौरान बहुत से विद्वानों ने अपनी–2 खिड़कियों के शटर बंद कर दिए, बाहर देखना तो छोड़ो, वे तो भूल ही गए कि कितनी कोशिशों और प्रार्थनाओं के बाद इस यात्रा का मौका मिला था। वे तो बस इसी बात पर ध्यान लगाये थे कि मेरी बात पर कितनी वाहवाही हुई, कितनी तालियाँ बजी और किसी दूसरे विद्वान की किस बात पर किरकिरी हुई, आलोचना हुई।

यह दौर जारी ही था कि एक दिन अचानक बस रुकी और कंडक्टर ने बोला, "उतरो सभी, यात्रा समाप्त हो चुकी है। "सब हैरान, परेशान और भौंचक्के से कंडक्टर को घूरने लगे और बोले, "अरे, ऐसे–कैसे यात्रा समाप्त, हमने तो आधा देश भी नहीं देखा। वे रोने लगे, गिड़गिड़ाने लगे कि एक मौका और दे दो, अब की बार अच्छी तरह से देश का भ्रमण करेंगे। लेकिन कंडक्टर ने उनकी एक न सुनी और सभी को बस से बाहर कर दिया।

और इस तरह यह यात्रा यहीं समाप्त हो जाती है। हममें से अधिकतर लोगों के जीवन की यात्रा भी कुछ इसी तरह आरम्भ होती है एवं समाप्त भी हो जाती है। लम्बे इंतज़ार और हजारों प्रार्थनाओं के बाद हमें यह मनुष्य जीवन प्राप्त होता है अर्थात यात्रा आरम्भ होती है। "शुरू में तो" अर्थात बचपन में तो सब अच्छा लगता है, अदभुत उमंग, हर पल उत्साह, सब लोग, सब बातें, सब जगह, हर वस्तु अच्छी लगती है। न कुछ खोने का डर, न कुछ पाने की चाह। लेकिन फिर हम बड़े हो जाते है या यूँ कहिये कि "विद्वान" बन जाते हैं। पहले, अपने आपको बड़ा आदमी बनाने, फिर दिखाने और फिर कहलवाने के चक्कर में हम भूल ही जाते हैं कि जीवन की यह यात्रा आगे बढ़ती जा रही है। "अपनी–2 खिडकियों के शटरबंद" करने का अर्थ है कि जीवन के छोटे–छोटे खूबसूरत पहलुओं को नज़रंदाज़ करना और अपनी बड़ाई एवं दूसरों की बुराइयों को ही जीवन का ध्येय बना लेना। कहानी की यात्रा में जो "लोग मूक दर्शक बन कर बैठे थे" वे ऐसे लोग हैं जिनका मकसद केवल दूसरों के जीवन का अध्ययन करना होता है। किस ने क्या कहा, कब कहा, कैसे बोला, क्या पहना, क्या खाया, कहां गए, कब आये, आदि–आदि। अपनी यात्रा का अर्थात जीवन का भी कुछ मकसद है, ये लोग ताउम्र इससे अनभिज्ञ रहते हैं और अंत में, "कंडक्टर" यहाँ काल या मृत्यु का रूप है जो सारे रास्ते चुपचाप हमारे साथ यात्रा करता रहता है और निश्चित समय पर हमें बस से उतार देता है अर्थात जीवन की यात्रा समाप्त कर देता है। "रोने और गिड़गिड़ाने" का तात्पर्य बीते समय को वापस बुलाने की कोशिश करने से है। जो समय जा चुका है, वह किसी कीमत पर वापस नहीं आ सकता, यह भी तय है।

इस यात्रा के यात्रियों को "विद्वान" बताने का कारण भी यही है कि हम सभी इस बात का ज्ञान रखते हैं कि जीवन इतना बड़ा भी नहीं है कि इसे छोटी–छोटी बातों में व्यर्थ गवां दिया जाए। फिर भी, न जाने क्यों हम ऐसा ही करते रहते हैं तब तक, जब तक की बस ना रुक जाए और कंडक्टर यह न बोले कि ''उतरो सभी, यात्रा समाप्त हो चुकी है।''

* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (सा.), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

रावण की हँसी

*डॉ. रवि शर्मा

आज दशहरा है। कल देर रात रामलीला देखकर लौटा था, इसलिए सुबह आँख ही नहीं खुल रही थी परंतु सैर करने तो जाना ही था, अनमने मन से मैं उठा और सैर को चल दिया। चलते–चलते बाहर मैदान में आ गया। वहां बड़े मैदान में रावण, कुंभकरण और मेघनाद के विशालकाय पुतले खड़े दिखाई दिए। पुतले हर वर्ष लगातार और ऊंचे तथा भव्य होते जा रहे हैं। ठीक ही है, रावण की ऊंचाई और भव्यता यदि कलियुग में नहीं बढ़ेगी तो फिर कब बढ़ेगी? तभी मुझे लगा जैसे किसी पुतले में से आवाज़ आई– 'ठहरो'। मैं डरकर ठहर गया तथा पुतलों की ओर देखने लगा। रावण के पुतले के होंठ हिले, वह बोला– 'क्यों व्यंग्यकार महाराज। व्यंग्य का कोई विषय ढूंढ रहे हो क्या?' मैंने 'हां' में सिर हिला दिया। घबराहट के मारे मेरे मुख से आवाज़ तक नहीं निकली।

रावण हंसा। व्यंग्यपूर्ण हंसी! 'अरे इतना लंबा–चौड़ा मैं, अपने दो साथियों सहित सामने खड़ा हूं, तब भी तुम्हें व्यंग्य का विषय नहीं सूझ रहा? ध्यान से सुनो। त्रेता में तो मैं केवल एक ही था। मेरी इच्छा होती थी कि मैं एक से बहुत हो जाऊं। मेरा ही राज था सब ओर, फिर भी ऐसा कभी नहीं हो पाया, परंतु कलियुग में आकर तुम्हारे लोकतंत्र ने मुझे एक से अनेक बना दिया। गली–मोहल्ले, गांव–शहर, कस्बे महानगर में हर जगह रावण ही रावण हैं जो रावण पुतले के रूप में खड़े हैं उन्हें तो तुम जला दोगे, मगर जो रावण मन–मन में बसे हैं उन्हें कैसे जलाओगे? मैंने वेश बदलकर सीता का अपहरण किया, उसे कई माह कैद में रखा, मगर उसके साथ कभी कोई जोर जबरदस्ती नहीं की। मैं चाहता तो क्या नहीं कर सकता था मगर मुझे अपनी मर्यादा, अपने कुल गौरव और आत्मसम्मान का ज्ञान था। फिर मैंने जो कुछ किया, अपनी बहन की बेइज्जती का बदला लेने के लिए किया, मेरा तरीका ठीक नहीं था इसलिए मैं अपने किए पर लज्जित हूं और आज के ये रावण! राह चलती सीता–सावित्री को दिन–दहाड़े कार में डालकर ले जाते हैं और उनके साथ कितना घिनौना व्यवहार करते हैं,

उनकी इज्जत को मिट्टी में मिला देते हैं। उसे जीते जी मार देते हैं। इन रावणों को न तो अपने किए पर लज्जा आती है, न पश्चाताप होता है।

लोकतंत्र हो या राजतंत्र, प्रजातंत्र हो चाहे तानाशाही– सबमें वास्तव में क्या रावण तंत्र ही हावी नहीं है। ब्राह्मण हो, चाहे क्षत्रिय या वैश्य, क्या सबने सुरा–सुंदरी को गले नहीं लगाया है। नेता हो चाहे अभिनेता, मंत्री हो या अधिकारी, शिक्षक हो या उपदेशक सभी अपनी आसुरी वृत्तियों को छिपाकर संत–महात्मा का वेश धारण करके क्या सब ओर मौजूद नहीं हैं।

क्या अब सीता कहीं भी सुरक्षित है। नहीं, वह अब कहीं भी सुरक्षित नहीं है, न ही घर में, न बाहर, न अपनों से, न परायों से। वाह! कैसा आधुनिक सभ्य–सुसंस्कृत समाज विकसित किया है तुमने, कैसे–कैसे राम हैं आज और कैसा रामराज्य? जिस देश में राम की जन्मभूमि को लेकर ही विवाद हो, राम की बात करना ही सांप्रदायिक हो जाता हो, राम का मंदिर बनाना भी स्वार्थ की भेंट चढ़ गया हो, रामराज्य की स्थापना की कोशिश में रावण राज्य स्थापित कर दिया हो, क्या वहां वैसे लोगों को रावण का पुतला जलाने का कोई अधिकार है? रावण

* एसोसिएट प्रोफेसर, श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय

को मारना है तो अपने भीतर के रावण को मारो, मगर उसके लिए राम जैसा त्याग, पराक्रम, संगठन शक्ति, नेतृत्व क्षमता, धैर्य और विवेक कहां से लाओगे? क्या आज किसी के भी पास हैं ये सब गुण? क्या है आज एक भी ऐसा नेता जो सच्चे अर्थों में रामराज्य बनाने के लिए कटिबद्ध हो? फिर इन्हें क्या अधिकार है रामलीला के मंचों पर चढ़कर अपना स्वागत–सत्कार करवाने का, राम के आदर्शों की दुहाई देने का, लंबे–चौड़े भाषण देने का? क्या इन्होंने कभी अपने गिरेबान में मुंह डालकर देखा है। मुंह में राम बगल में छुरी रखने वाले इन नेताओं के सम्मान में ताली बजाने वाली जनता भी धन्य है। इसे राम और रावण में अंतर ही नहीं दिखता, या यह अंतर देखना नहीं चाहती और तुम बड़े तीस मार खां बने फिरते हो, खुद को पत्रकार कहते हो, व्यंग्य लेखक कहलाते हो, तुम क्या करते हो। क्या तुम भी लाभ–हानि, पद–पुरस्कार पर दृष्टि केन्द्रित करके लेखन नहीं करते? क्या तुम भी उन्हीं सब सुख–सुविधाओं के पीछे नहीं भागते जिन्हें पाने की कोशिश करते अन्य लोगों पर तुम व्यंग्य लिखते हो? रावण ठहाका मारकर हंसा। उसकी हंसी व्यंग्य और तिरस्कार से पूर्ण थी, तभी मेरी आंख खुल गई।

मैंने सारी स्थिति पर विचार करके निश्चय किया कि मैं अब कभी रावण के पुतलों को जलता देखने नहीं जाऊंगा। क्या आपको रावण की हंसी सुनाई नहीं दी?

अंतर्मन की आवाज़

*दिव्य खत्री

मैं... सफर हूँ
एहसास हूँ तेरे लिए

मैं... शब्द भी
सपनों में कुछ लफ्ज़ लिए

उम्मीद की कहानियां...
तेरे जिस्म की रूह तक
हौल–हौले चल ज़रा
हौसले को बुलन्द कर

सवालों से घिरे वो पल
वक्त कर सके ब्यां
बारीकियाँ तेरे दिल की
कुछ पल सिमट जाए जहां

मैं वक्त हूँ.....

मैं वक्त हूँ, शब्द भी
सफर के वो पल भी

सवालों से घिरे तो क्या
नज़र मिला के मिल ज़रा

मैं.. फर्ज़ हूं

मैं फर्ज हूं, जरा रुक तो जा
ध्यान में मुझको तू ला
रास्ते तूफान भरे
मुझको तू न आज़मा

वो कश्तियां ठहर गईं
यात्री बस खो गए
उम्मीदें फिसल गईं
जिंदगी भी हुई धुआँ

मैं हूं..
सफ़र भी हूं, शब्द भी हूं
वक्त और फ़र्ज भी हूं
जिसको अपनी कदर नहीं
उसके लिए, मैं सबक भी हूं।

* सुपुत्र श्रीमती संगीता खत्री, वरिष्ठ निजी सहायक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

धैर्य और व्यवहार

*रेखा दुबे

मानव जीवन चुनौतियों से झूझने का नाम है तो सुखों से परिपूर्ण एक संपूर्ण संसार भी है। बचपन से लेकर बुढ़ापे तक के सफर में न जाने कितने उद्देश्य व लक्ष्य को पाने की चाह जीवन में कहां से शुरू होती है तो कहां हमारे सपनों का अंत होता है। वैसे अंत तो होता ही नहीं है क्योंकि चाहतें तो हमेशा परवान चढ़ने को उतारू रहती हैं। इस सफर में हम कई चरण पार करते हैं। कई लोग हैं जिनकी अपने जीवन में बहुत आकांक्षाएं हैं तो कुछ बिना आंकाक्षाओं के ही जी रहे हैं। ftnxh rk lHkh d fy, ogh g Qd cl bruk g fd dkb fny l th jgk g vkj dkb fnYk j[ku d fy,A कई लोग अपने जीवन में कई ऊँचाईयों को पार करते हैं तो कुछ के सपने परवान नहीं चढ़ते। लेकिन चलना जीवन की निशानी है इसलिए शुरूआत मुस्कुरा कर की जाए तो बेहतर नतीजे सामने आएंगे।

ftnxh e ef'dy reke g
fQj Hkh bu gkBk ij eLdku g
D;kfd thuk g tc gj gky e
fQj eLdjkdj gh thu e D;k udlku gA

कई बार इंसान की परिस्थिति उसका साथ नहीं देती तो कभी हम स्वयं परिस्थिति को बदलने का प्रयास नहीं करते। हम सब कुछ बदलना चाहते हैं लेकिन खुद को बदलने का प्रयास नहीं करते और हमारी यही कमी हमें कई खुशियों से महरूम कर देती है। गालिब ने सच कहा है कि

me Hkj xkfyc ;gh Hky djrk jgk]
èkYk pgj ij Fkh vkj vkbuk lkQ djrk jgkA

हम कहते हैं कि जीवन छोटा है पर मेरा मानना है कि जीवन छोटा नहीं है, हम जीना ही देर से शुरू करते हैं। जो नहीं मिला उसके पीछे आंसू बहाकर जो मिला उसकी खुशी नहीं मना पाते और इसमें बहुत कुछ हाथों से फिसल जाता है।

* सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

मैं इस बारे में एक छोटी सी घटना बताना चाहूंगी। मैं एक दिन रैड लाइट के पास बस स्टैंड पर अपनी दोस्त की प्रतीक्षा कर रही थी। मैं बड़ी देर से देख रही थी कि करीब दस साल का बच्चा हर रुकने वाली गाड़ी के शीशे को साफ करता, कोई उसे पैसे दे देता और कोई नहीं भी, लेकिन मैं उसके धैर्य की तारीफ कर रही थी कि वो बिना उम्मीद किए अपना काम किए जा रहा था। इस बार रैडलाइट पर एक मर्सीडिज़ बैंज रुकी, उस बच्चे ने शीशे साफ किए। कार की विंडो खुली और उस व्यक्ति ने बच्चे से कुछ कहा और बच्चे की आंखों में आश्चर्य के साथ खुशी झलक आई। गाड़ी का दरवाज़ा खुलते ही बच्चा लपक कर बैठ गया। मुझे बड़ा ही अजीब लगा और कुछ देर में गाड़ी चली गई।

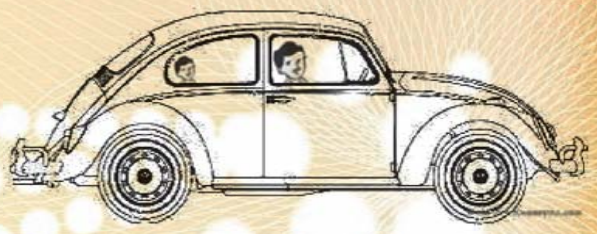

करीब दस मिनट के बाद बस स्टॉप पर गाड़ी रुकी और एक बच्चा नीचे उतरा। मैंने गौर किया कि यह वही बच्चा था। मेरा मन किया कि मैं उससे बात करूं। मैंने उस बच्चे को बुलाया और पूछा कि तुम इस रैडलाइट पर सारी गाड़ियां साफ करते हो और कोई पैसे भी नहीं देता फिर भी तुम लगे रहते हो, तुम्हें बुरा नहीं लगता तुम्हारी मेहनत व्यर्थ जाती है। वो बोला मैं बस अपना काम करता हूं, जो देता है उसका भी भला और जो न दे उसका भी। मैंने उससे पूछा कि तुम्हें उस गाड़ी वाले ने क्या कहा कि तुम उसके साथ चल दिए। उसने कहा कि उन साहब ने पूछा कि गाड़ी में बैठेगा तो मैंने हां कर दी। मैंने साहब से पूछा कि आपकी कार तो बहुत महंगी होगी तो उन्होंने बताया कि ये गाड़ी उनके पिता ने गिफ्ट की है। उन्होंने मुझसे कहा कि तुम्हारा भी मन करता होगा कि कोई तुम्हें भी गिफ्ट दे तो मैं चुप

रहा। मैंने उस बच्चे की आंखों में कुछ ऐसा देखा कि उसे कुछ करने का जुनून था। मैंने कहा कि तुम पढ़ाई क्यों नहीं करते तो उसने बताया कि वह रात में पढ़ता है। उसकी आंखों में कई बड़े सपने पनप रहे थे। मैंने उससे पूछा तुम बड़े होकर क्या बनना पसंद करोगे तो उसने बड़े सरल शब्दों में कहा कि मेरा मन है कि मैं ऐसा पिता बनूं कि अपने बच्चों को ऐसी कार गिफ्ट में दे सकूं। मैं उस बालक की सोच पर हैरान थी कि इतनी छोटी–सी उम्र और इतने अभावों में ऐसी सोच। मैंने प्यार से उस बालक के सर पर हाथ फेरा और कहा कि एक दिन तुम सचमुच अपने सपनों को पूरा करोगे। मेरे मन ने उसे करोड़ों आशीषें दी कि हे ईश्वर! इस बच्चे को अपना आशीर्वाद देना और इसके सपनों को बुलंदी। इस घटना को बताने का केवल यही मकसद था कि इस बालक के धैर्य और उस कार मालिक के व्यवहार ने मेरी इस सोच को मजबूत किया कि gekj tthou dk nk ckr g tk [kclj cuk ldrh g ;k ; dg ok gekj thou dk ifjHkkf"kr djrh g vkj o g èk; vkj 0;ogkjA vkidk èk; tc vkid ikl dN u gk vkj vkidk 0;ogkj tc vkid ikl lc dN gk vkidk ,d vke blku l [kkl cuk nrk gA उस कार के मालिक ने साधारण से बालक के जीवन को ऐसा लक्ष्य दे दिया जिसे पूरा करने का जुनून मैंने उस बच्चे की आंखों में देखा।

j[k gklyk ok etj Hkh vk,xk
I;kl d ikl pydj lenj Hkh vk,xk
Fkd dj u cB , eft y d elkfQj
eft y Hkh feyxh vkj thu dk etk Hkh vk;xk

इसलिए जीवन में सब्र का दामन थामिए और अपने व्यवहार को हर परिस्थिति में नियंत्रित रखिये क्योंकि lc ,d ,lh lokjh g tk viu lokj dk dHkh fxju ugh nrh] u fdlh dh utjk e vkj u fdlh d dnek e vkj 0;ogkj vkidk ,lk gk fd fdlh d fny e mrj tk, u fd fdlh d fny lA

एहसान इतना कर दो

* नीलम खुराना

मेरी ज़िन्दगी में अपनी, भक्ति का रंग भर दो ।
चरणों में तेरे आया, एहसान इतना कर दो ।।

रहूं आज्ञा में तेरी मैं, दिन–रात मेरे भगवन,
तेरी किरपा के बिना है, यह काम बहुत मुश्किल ।
किरपा का हाथ रख दो, एहसान इतना कर दो ।।

मेरी जिन्दगी.....
कोई भी गुण न मुझमें, जिससे तुम्हें रिझाऊं,
सेवा न भक्ति जानूं, कैसे मैं तुझको भाऊं ।
मेरे सब गुनाह ब़ख्शो, एहसान इतना कर दो ।।
मेरी जिन्दगी.....

मुझ जैसे होंगे लाखों, तुझ जैसा एक तू है,
मुझको तेरी लगन रहे, इक ये ही आरजू है ।
यह विनय कबूल कर लो, एहसान इतना कर दो ।।

मेरी जिन्दगी.....
मैं जैसा भी हूं भगवन, तेरा ही दास हूं,
तुमको है लाज मेरी, चरणों में आ पड़ा हूं ।
अपना बिरद संभारो, एहसान इतना कर दो ।।
मेरी जिन्दगी.....

* वरिष्ठ निजी सहायक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

खुशी की खोज

सभी को खुशी की चाह है, खुशी की खोज है– और यही कारण है कि हम चूकते चले जाते हैं। इसको खोजने की जरूरत नहीं है। बस जीना शुरू कर देना होता है।

खुशी के लिए कल का इंतजार करने की जरूरत नहीं है वरना तुम कभी भी खुश नहीं होओगे।

राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता की भाषा हिन्दी

* प्रकाश चन्द्र मैठाणी

किसी भी देश की भाषा उस देश की राष्ट्रीयता की आधारशिला है। भाषा केवल विचारों, भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है अपितु यह देश की संस्कृति, धर्म, दर्शन, लोक परंपराओं की संवाहिका है। विश्व में सभी राष्ट्रों की अपनी भाषा है। सभी राष्ट्र अपनी राष्ट्रभाषा के माध्यम से स्वयं को अभिव्यक्त करते हैं। वस्तुतः भाषा, संस्कृति एवं मातृभूमि के समवेत भाव को ही राष्ट्र कहते हैं। इन्ही तीनों तत्वों के समन्वय से राष्ट्रीयता की अवधारणा पूर्णतः प्राप्त होती है। राष्ट्र के वैचारिक एवं भावनात्मक एकता के लिए सामाजिक, सांस्कृतिक भाव को परिपुष्ट करने वाली भाषा ही है। अतः भाषा राष्ट्र की एकता का मेरुदण्ड है। विश्व में हर राष्ट्र का नागरिक राष्ट्रीयता एवं स्वयं को भाषा से जोड़ता है। यदि आप किसी देश के नागरिक से पूछें कि आप कौन, तो वह बोलेगा कि मैं चीनी, मैं जापानी, मैं फ्रान्सिसी, मैं हिन्दुस्तानी और उसकी भाषा का नाम पूछने पर वह बोलेगा कि मेरी भाषा चीनी, जापानी, फ्रान्सिसी और हिन्दुस्तानी। इसका तात्पर्य यह है कि भाषा और राष्ट्रीयता एक ही है। आचार्य दण्डी ने भाषा की महत्ता प्रतिपादित करते हुए इसे विश्व को बाँधने वाली कहा है। यदि शब्द रूपी ज्योति इस संसार को प्रकाशित नहीं करती तो यह त्रिभुवन अंधकारमय होता।

किसी देश की एकता, अखण्डता तथा सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा में उस देश की भाषा या राष्ट्रभाषा का योगदान होता है। राष्ट्रभाषा में राष्ट्रीयता के समस्त तत्वों यथा– धर्म, दर्शन, संस्कृति, देशभक्ति, इतिहास, लोकसाहित्य का समावेश होता है। अतः संभवतः इन्हीं तत्वों को दृष्टि में रखकर भारतीय संविधान निर्माताओं एवं राष्ट्र के मनीषियों ने भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अन्तर्गत हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया। यह निर्णय किसी दबाव अथवा किसी तात्कालिक निहित स्वार्थ के कारण नहीं लिया गया अपितु बहुभाषी देश भारत में हिन्दी सबसे बड़े भूभाग में बोलने के कारण तथा हिन्दी भाषा के भारत की सबसे प्राचीन वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पालि, प्राकृत आदि भाषाओं में निहित ज्ञान राशि को आत्मसात करने की क्षमता के कारण लिया गया। हिन्दी ने अरबी, फारसी और उर्दू के तमाम शब्दों को सहजता से अपनाया है और सर्वसमर्थ है। यह भाषा देश की एकता की कड़ी है।

यह भाषा जनता की सम्पर्क भाषा है। इसकी लिपि देवनागरी संसार की सभी लिपियों में श्रेष्ठ, सरल एवं वैज्ञानिक है। यह भारत की पुनर्जागरण, राष्ट्रीय चेतना एवं राष्ट्रीय स्वतंत्रता दिलाने वाली भाषा है। प्राचीन वैदिक संस्कृति के उन्नायक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वयं गुजराती एवं संस्कृतज्ञ होते हुए भी वेद भाष्य, अपने उपदेश एवं विचार हिन्दी भाषा में दिए। उन्होंने अपने ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश', 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका', 'उपदेश मंजरी', 'संस्कार विधि' आदि हिन्दी में लिखे। उनका मत था कि ''हिन्दी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।'' अपने पूना प्रवचन में उन्होंने कहा था ''एक लक्ष्य, एक भाषा बनाए बिना भारत का पूर्ण हित एवं राष्ट्रीय उन्नति का होना दुष्कर है। सब उन्नतियों का केन्द्र स्थान ऐक्य है। जहां भाषा, भाव एवं भावना में एकता आ जाए वहीं सागर में नदियों की भांति सारे सुख एक–एक करके प्रवेश करने लगते हैं।''

हिन्दी खड़ी बोली के जन्मदाता माने जाने वाले महान साहित्यकार भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने हिन्दी के महत्व

* सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

को प्रतिपादित करते हुए कहा था ''निज भाषा उन्नति अहे निज उन्नति को मूल, बिन निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय को शूल''। भारतीय नवजागरण के अग्रदूत राजा राम मोहन राय ने समस्त भारत में एकता बनाए रखने के लिए हिन्दी को अनिवार्य माना। ''केशवचन्द सेन ने 1885 में अपने लेख में लिखा कि ''भारतीय एकता का उपाय है कि सारे भारत में एक भाषा का व्यवहार हो, हिन्दी को यदि राष्ट्रभाषा बनाया जाए तो यह कार्य सहज और शीघ्र सम्पन्न हो सकता है।''

वास्तव में भाषा केवल अभिव्यक्ति का साधन मात्र नहीं है वरन यह दिलों को जोड़ती है, मैत्री और एकता की भावना पैदा करती है। हिन्दी के बिना राष्ट्र गूंगा और राष्ट्रीयता शून्य है। अतः राष्ट्रीय संस्कृति, राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्रीय स्वाभिमान के तकाजे से हमें हिन्दी भाषा को अपनाना ही होगा। हिन्दी भारतीयता का पर्याय है। आइये, यह संकल्प लें कि हिन्दुस्तान की हिन्दुस्तानी और भारत माता की भारती हमारे हृदय में सदा विराजती रहेः–

ekul Hkou e vk;tu mrkj ftl dh vkjrh]
Hkxoku Hkkjr o"k e xt gekjh Hkkjrh]
Hkkjr e Hkkjrh dk vej dhfrxku gk]
uotkxj.k dh T;kfr ty uofogku gkAA

हम किधर जा रहे हैं!

*एस. नारायण

जानकर कि छूटनी है पकड़, फिर भी
बंद मुट्ठी को और कसते जा रहे हैं!

साथ किसी का भी कब तक है मयस्सर
आस फिर भी हम लगाते जा रहे हैं!

रूह जख्मी है, कैद है जब जिस्म में
घाव पर मरहम लगाते जा रहे हैं!

सांस धूँ–धूँ जल रही आवाम में
आग पर पानी उड़ेले जा रहे हैं!

स्वार्थ के जबड़े में फंसी वफादारियां हैं
ईमान की दुहाई दिये जा रहे हैं!

मानते हैं शक्ल दिल का आईना है
फिर भी हम मुखड़ा सजाये जा रहे हैं!

हम किधर जा रहे हैं!
हम किधर जा रहे हैं!

* उप महाप्रबंधक (आर एंड पी), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

मैं और मेरी तन्हाई

* जे.के. शर्मा

मैं और मेरी तन्हाई, अक्सर मुलाकात करती है
न हो कुछ बात तो भी बात करती है

मेरे दिल की बेकरारी को करार देती है
उलझी–सी मेरी जिंदगी को सँवार देती है

अंधेरे में यादों का दीया जला देती है
मेरी नम आँखों को थोड़ा–सा हँसा देती है

मेरा खुद से नया रिश्ता बना देती है
मेरे शब्दों को पिरोकर कविता बना देती है

मेरे अकेलेपन को थोड़ा–सा सजा देती है
मेरे अपनों को बंद आंखों से मिला देती है

मेरी खामोशी को नई जबां देती है
मेरे ख्वाबों को नया आसमां देती है

कुछ भी कहो तन्हाई है बड़ी प्यारी
आंखों में सजा देती है खुशियां सारी

तन्हाई से जब भी मिलता हूं
तो तकदीर पर नाज़ होता है

तन्हाई जब जाती है
मन उदास होता है

* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (लेखा), क्षेत्रीय कार्यालय, पटना

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), दिल्ली के तत्वावधान में निगम द्वारा हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), दिल्ली के तत्वावधान में दिनांक 05.12.2014 को केन्द्रीय भंडारण निगम द्वारा नराकास के सदस्य उपक्रमों के लिए हिन्दी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता के अवसर पर श्री जे.एस.कौशल, निदेशक (कार्मिक), श्री ओ.पी. भारती, महाप्रबंधक (निरीक्षण एवं प्रचार), श्री एस. नारायण, उप महाप्रबंधक (कार्मिक) एवं नराकास के सदस्य सचिव श्री हीरा वल्लभ शर्मा उपस्थित थे। इस प्रतियोगिता में विभिन्न उपक्रमों से आए 29 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का शुभारंभ श्रीमती नम्रता बजाज, प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा किया गया। निगम के निदेशक (कार्मिक) ने नराकास के सदस्य सचिव का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया। सभी उपस्थित प्रतिभागियों ने अपना संक्षिप्त परिचय दिया। नराकास के सदस्य सचिव ने नराकास के तत्वावधान में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के संबंध में विस्तार से जानकारी दी और इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों के भाग लेने एवं निगम द्वारा इसके आयोजन पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने बताया कि इस वर्ष भी नराकास के तत्वावधान में विभिन्न उपक्रमों द्वारा प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं।

इस प्रतियोगिता के अवसर पर निदेशक (कार्मिक) ने भण्डारण भारती के अंक–54 का विमोचन किया तथा हिंदी स्मारिका–2014 के पुरस्कार विजेताओं को भी पुरस्कृत किया। इस अवसर पर अपने सम्बोधन में निदेशक (कार्मिक) ने कहा कि नराकास के मंच से इस प्रतियोगिता का आयोजन हमारे लिए गौरव की बात है। ऐसे आयोजनों से राजभाषा के लिए अच्छा वातावरण तो बनता ही है साथ ही इससे राजभाषा के कार्य में भी गति मिलती है। उन्होंने उपस्थित प्रतिभागियों को मंत्रालय द्वारा निगम को राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य हेतु पुरस्कृत करने की जानकारी भी दी। उन्होंने कहा कि निगम राजभाषा को बढ़ावा देने के लिए सभी स्तरों पर प्रयास कर रहा है। हमें राजभाषा में कार्य करने के लिए नराकास से पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं तथा निगम द्वारा प्रकाशित पत्रिका ''भण्डारण भारती'' को भी समय–समय पर पुरस्कृत किया गया है। निगम के कार्य की राजभाषा के क्षेत्र में कई स्तरों पर सराहना की गई है जो कि प्रसन्नता की बात है। विभिन्न सदस्य उपक्रमों के प्रतिभागियों ने निगम द्वारा आयोजित इस प्रतियोगिता में भाग लेकर राजभाषा के प्रति उत्साह दिखाया है जो प्रसन्नता की बात है।

प्रतियोगिता के अंत में धन्यवाद प्रस्ताव के बाद सभी प्रतिभागियों को निगम की ओर से स्मृति चिह्न भेंट किया गया।

महात्मा ज्योतिबा फुले : सामाजिक उत्थान में योगदान

*डॉ. मीना राजपूत

समाज शब्द 'सभ्य मानव जगत' का सूक्ष्म स्वरूप और सार रूप है। मानव को समाज की आवश्यकता आपसी एकता और बन्धुत्व बनाए रखने, शिष्टाचार और अनुशासन कायम करने तथा सामूहिक जीवन सुरक्षा के लिए होती है। चूँकि समाज संबंधों की एक व्यवस्था है, इसलिए इसका कोई मूर्त रूप नहीं होता। समाज में सहयोग, समायोजन, सामाजिक आन्दोलन, क्रान्ति, प्रगति, विकास की प्रक्रिया सतत चलती रहती है। इसके अनुसार समाज में कभी मन्द गति से तो कभी तीव्र गति से परिवर्तन होता रहता है। कभी–कभी किसी विशिष्ट संस्था, संगठन या किसी एक व्यक्ति के प्रयासों से भी परम्परागत व्यवस्था से अलग राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक क्षेत्रों में युगान्तकारी परिवर्तन होते हैं। दलित समाज और नारी जाति की शिक्षा और समानता के लिए अपने व्यक्तिगत प्रयासों से महात्मा ज्योतिबा फुले ने भी सामाजिक उत्थान में एक नया अध्याय जोड़ा है।

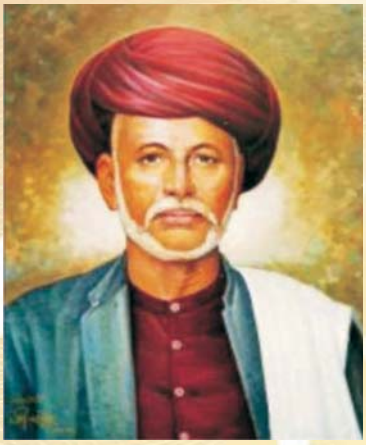

जोतिराव गोविन्दराव फुले का जन्म 11 अप्रैल, 1827 को पुणे में हुआ था। उनका परिवार कई पीढ़ी पहले फूलों के गजरे बनाने का काम करता था इसलिए 'फुले' के नाम से जाना जाता था। जोतिराव फुले एक प्रबुद्ध विचारक, महान दार्शनिक, निष्ठावान समाजसेवी, जागरूक लेखक और क्रान्तिकारी थे। सामाजिक उत्थान के लिए किए गए अपने कार्यों के चलते कालान्तर में वे 'महात्मा ज्योतिबा फुले' नाम से प्रसिद्ध हुए।

जोतिराव फुले के दौर में देश की सामाजिक स्थिति बहुब चिन्तनीय थी। स्त्रियों पर मानसिक और शारीरिक अत्याचार अपने चरम पर थे। बाल विवाह, अनमेल विवाह, बहुपत्नी विवाह, सती प्रथा आदि कुप्रथाएं समाज में व्याप्त थीं। बेटियों को जन्म लेते ही मार देना, विधवाओं के साथ तरह–तरह के अमानवीय व्यवहार करना आम बात थी। समाज में जाति आधारित विभाजन और भेदभाव प्रचलित था। वर्ण व्यवस्था के नाम पर दलितों पर अत्याचार किए जा रहे थे।

ऐसे घोर सामाजिक पतन के समय, 19वीं सदी के मध्य में महात्मा फुले ने सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया। महान विचारक महात्मा फुले ने राजनीतिक दासता की तुलना में सामाजिक दासता को अधिक अमानवीय और अपमानजनक माना और सामाजिक लोकतन्त्र की स्थापना की महत्ता का प्रतिपादन किया और, यह प्रण किया कि मैं अपना सारा जीवन महिलाओं और दलितों को शिक्षित और जागृत करने में अर्पित कर दूँगा। उनका सामाजिक क्रान्ति का यह अनुष्ठान 'सर्वजन हिताय – सर्वजन सुखाय' था, जो उनके जीवन संघर्ष का पहला और आखिरी लक्ष्य भी रहा। इस प्रकार सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत महात्मा फुले ने भारतीय सामाजिक संरचना की जड़ता और रूढ़ियों पर प्रहार करते हुए अपने सामाजिक आन्दोलन का सूत्रपात किया।

सम्पूर्ण समाज के लिए आदर्श और प्रेरणा स्रोत रहे महात्मा फुले ने समाज की दशा और दिशा का सूक्ष्मता से अध्ययन कर यह जाना कि शिक्षा से ही समता आधारित समाज की स्थापना की जा सकती है। शिक्षा ही वह समर्थ साधन है जो समाज में मूक क्रान्ति सहज ढंग से ला सकती है इसलिए उन्होंने समाज से छोटे–बड़े, ऊँच–नीच का भेद मिटाने के लिए किसानों, मजदूरों, महिलाओं और तमाम पिछड़े तबके के लोगों को सुशिक्षित करने का बीड़ा उठाया। शिक्षा को सामाजिक उत्थान का प्रभावशाली माध्यम मानते हुए दलितों और महिलाओं की शिक्षा के लिए ठोस और साहसी कदम उठाए।

* सहायक प्रबंधक (राजभाषा), क्षेत्रीय कार्यालय, नवी मुंबई

ज्योतिबा फुले का मानना था कि परमेश्वर एक है और सभी मानव उसकी सन्तान हैं। समाज में स्त्री–पुरूष का दर्जा बराबर है, इसलिए शिक्षा दोनों के लिए समान रूप से आवश्यक है। भारत में सदियों से शिक्षा से वंचित दलित, आदिवासी और नारी समाज को उन्होंने शिक्षा का अधिकार दिलाया। इसकी शुरुआत महात्मा फुले ने अपने ही घर से की। उन्होंने अपनी निरक्षर पत्नी सावित्रीबाई फुले को स्वयं पढ़ना–लिखना सिखाया। उनका मानना था कि सामाजिक बराबरी की कोई भी लड़ाई स्त्रियों की भागीदारी के बिना अधूरी है। इसलिए 1 जनवरी, 1848 को उन्होंने दलित बालिकाओं के लिए पुणे में बालिका विद्यालय की स्थापना की। लड़कियों के लिए स्थापित यह पहला विद्यालय अपने आप में एक क्रान्तिकारी कदम था। बालिका विद्यालय में शिक्षिका के अभाव में उन्होंने अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले को शिक्षिका की बागडोर थमायी। सावित्रीबाई ने भी सारे विरोधों, अपमानों, बाधाओं का निर्भयता और बहादुरी से सामना करते हुए शिक्षा की क्रान्ति की ज्योत को जलाए रखा। 15 मई, 1848 को महात्मा फुले ने अछूतों के लिए देश में पहला और 1855 में पुणे में भारत का पहला रात्रि प्रौढ़ विद्यालय खोला। उन्होंने पुणे और उसके आस–पास के क्षेत्रों में कुल 18 विद्यालय खोले।

इस प्रकार, वंचितों, दलितों, पिछड़ों और महिलाओं को शिक्षा का अधिकार दिलाकर महात्मा फुले ने सामाजिक आन्दोलन को और आगे बढ़ाया। उनके इन कार्यों की वजह से उन पर अनेक बार प्राणघातक हमले हुए। परन्तु, उन्होंने हार नहीं मानी और विचलित हुए बिना अपना कार्य करते रहे। उन्होंने भारतीय समाज में दलितों को शिक्षा का एक ऐसा अचूक मार्ग दिखाया जिस पर आगे चलकर दलितों ने अपने अधिकारों की कई लड़ाइयाँ लड़ीं।

बाल विवाह विरोधी और विधवा समर्थक महात्मा फुले ने स्त्रियों पर किए जा रहे अत्याचार के खिलाफ आन्दोलन चलाया। सती प्रथा के विरोध में मुहिम चलायी। विधवाओं की शोचनीय दशा को देखते हुए उन्होंने विधवा पुनर्विवाह की शुरुआत की। 1854 में महिलाओं के लिए आश्रम की स्थापना की, जहाँ पीड़ित महिलाओं को गरिमापूर्ण जीवन जीने के लिए प्रेरित किया जाता था। उनके विकास और जीवन के सर्वांगीण उत्थान की व्यवस्था की जाती थी। कन्या शिशु हत्या रोकने के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए उन्होंने भारत का पहला 'बाल हत्या प्रतिबन्धक गृह' खोला। महात्मा फुले ने स्त्रियों के सामाजिक उत्थान के लिए विभित्र कार्य कर जनसामान्य में स्त्रियों के प्रति सम्मान और समानता की भावना उत्पन्न की।

समाजशास्त्री महात्मा फुले वर्ण व्यवस्था के कट्टर विरोधी थे। उनका मानना था कि मनुष्य की श्रेष्ठता का प्रमाण उसकी जाति नहीं बल्कि उसके अपने गुण हैं। इसी उद्देश्य से उन्होंने 1873 में 'सत्यशोधक समाज' नामक संस्था की स्थापना की। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य बहुजन, शूद्रों और अति शूद्रों को उच्च जातियों द्वारा किए जा रहे शोषण से मुक्त कराना और समाज में लोकतान्त्रिक मूल्यों की स्थापना करना था। इस संस्था ने समाज में तर्कसंगत विचारों का प्रसार किया और शैक्षणिक और धार्मिक नेताओं के रूप में ब्राह्मण वर्ग को स्वीकार करने से साफ इंकार कर दिया। यह संगठन दलितों को शिक्षा देने के साथ–साथ पाखण्ड–अन्धविश्वास से दूर रहने और धार्मिक बातों को तर्क की कसौटी पर कसने की सलाह भी देता था। जनजागरण के काम में भी यह संगठन अग्रणी था। अपने इस अभियान को गतिशील बनाए रखने के लिए महात्मा फुले ने 'दीनबन्धु' नामक अखबार भी शुरू किया। उस समय ऐसा करने की हिम्मत करने वाले वे पहले मानवतावादी थे।

महात्मा फुले ने दलितों की अस्मिता, आत्मा सम्मान और स्वाभिमान को सदा ही महत्व दिया। उनको समाज की मुख्य धारा में लाकर राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक समानता पर आधारित शोषण रहित समाज बनाने का प्रयत्न किया, जिससे कि समाज के सभी लोग अपने–अपने अधिकारों और कर्तव्यों का पालन करते हुए गुजर–बसर कर सकें। दलितों पर लगे अछूत के लांछन को धोने और उन्हें बराबरी का दर्जा दिलाने की दिशा

में उन्होंने दलितों को अपने घर के कुएं से पानी लेने की अनुमति दी। और इस तरह समानता की एक अनूठी मिसाल कायम की।

जाति और वर्गविहीन समाज की स्थापना के लिए प्रयासरत महात्मा फुले ने एक विधवा ब्राह्मण स्त्री काशीबाई के बच्चे यशवन्त को अपने दत्तक पुत्र के रूप में गोद लिया। उसे पाल–पोसकर डॉक्टर बनाया। एक आदर्श सामाजिक कार्यकर्ता का परिचय देते हुए उन्होंने अपने दत्तक दुत्र यशवंत का अन्तरजातीय विवाह किया और समाज के सामने एक आदर्श प्रस्तुत किया। पूरे महाराष्ट्र में यह पहला अन्तरजातीय विवाह था।

सामाज के लिए प्रतिबद्ध, विचारशील चिन्तक और जागरूक लेखक महात्मा फुले ने सामाजिक परिवर्तन के साहित्य की रचना करके भी सामाजिक उत्थान का कार्य किया। मानवीय धरातल पर रचा गया उनका मानवतावादी साहित्य अन्ध विश्वासों, अन्ध श्रद्धाओं, अन्ध भक्तियों के प्रतिकूल वास्तविकता का पथ–प्रदर्शक है। समता, समरसता, समान अधिकार और सामाजिक न्याय का पक्षधर है। उनका साहित्य आज, 21वीं सदी में भी सामाजिक परिवर्तन के कार्यकर्ताओं का पथ–प्रदर्शन करता है। उनकी पुस्तक 'सार्वजनिक सत्यधर्म' समाज में सन्तुलित और योग्य जीवन बिताने की राह दिखाती है। उनकी पुस्तक 'गुलामी' किसानों की दुर्दशा और उसके उन्मूलन के उपाय बताती है तो 'शेतक–यांचा आसूड' पुस्तक उनकी उदयनीय परिस्थिति के कारण, निवारण और जीवन के उत्थान के निर्देश देती है। किसानों और खेतिहर मजदूरों से सम्बन्धित उनकी रचनाएं पशुपालन, खेती, सिंचाई व्यवस्था आदि योजनाओं की विस्तृत जानकारी से परिपूर्ण हैं। उनके 'अखण्ड' नामक काव्य में सामाजिक विषमता की निरर्थकता को उदाहरण सहित स्पष्ट किया गया है। उनके द्वारा लिखित नाटक 'तृतीय रत्न' बहुजन समाज में व्याप्त अज्ञान और अन्धविश्वास के साथ–साथ उनसे मुक्त होने का तत्वज्ञान सिखाता है। उनकी पुस्तक 'गुलामगिरी' पाखण्ड और भेदभाव को दूर करने के लिए समाज को दिशा देती है।

महात्मा फुले ने अपने जीवन में कभी भी दो मापदण्ड नहीं रखे। उन्होंने जो भी समाज के लिए हितकर पाया उसका उपदेश देने के बजाय पहले स्वयं ही अमल किया ओर उसके बाद उसे समाज में लागू करवाने की कोशिश की। महात्मा फुले के ऐसे सामाजिक क्रान्तिकारी विचारों और कार्यों से, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से, अनेक लोग प्रभावित हुए। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने ज्योतिबा फुले को 'सच्चा महात्मा' कहा। युग पुरुष महात्मा फुले से प्रभावित होकर विनायक दामोदर सावरकर ने उनके सामाजिक क्रान्ति के स्वर और आन्दोलन को आगे बढ़ाया। महात्मा फुले के विचारों और कार्यों से प्रभावित डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने महात्मा बुद्ध और कबीर के बाद उनको अपना गुरु माना और उनके पथ का अनुसरण करते हुए दलितों के उत्थान के लिए अनेक कार्य किए।

दलितों को भारत में जो भी अधिकार मिले हैं, उसकी पृष्ठभूमि महात्मा फुले की ही देन है। उनके प्रयासों का ही परिणाम है कि दलितों के अधिकारों को भारतीय संविधान में भी स्थान दिया गया है। आज दलित समाज पुरानी मान्यताओं, परम्पराओं और सोच को त्यागकर उन नई बातों को अपनाने की बात करता है जो तर्कसंगत हो, समय सापेक्ष हो और जो उसके मन और बुद्धि दोनों को उचित लगती हो। आज वह निरन्तर अपनी अस्मिता और अपनी पहचान की लड़ाई को धारदार बनाने की दिशा की ओर अग्रसर हो रहा है। सामाजिक – शैक्षणिक क्रान्ति के अग्रदूत महात्मा फुले के नारी शिक्षा के क्षेत्र में दिए गए योगदान का ही परिणाम है कि आज नारी में स्वाभिमान और आत्मविश्वास जागृत हुआ है। वह हर क्षेत्र में नित नए आयाम छू रही है। समाज में प्रतिष्ठित हुई है और अधिक अधिकार सम्पन्न हुई है।

शिक्षा और समानता के क्षेत्र में किए गए बुनियादी और ठोस कार्यों द्वारा सामाजिक उत्थान में महात्मा ज्योतिबा फुले के योगदान को सदा याद किया जाता रहेगा।

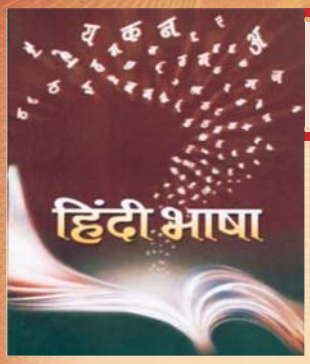

मेरी हिन्दी भाषा

*यास्मीन सैयद

देवों की कलम से
उपजी है मेरी हिन्दी भाषा
देवनागरी लिपि में लिखी जाती है मेरी हिन्दी भाषा

बांग्ला, गुजराती, भोजपुरी, मराठी
हैं और भी कई भाषाएं
जो भारत देश में हैं बोली जाती
पर जननी हैं इन सबकी मेरी हिन्दी भाषा

जैसे प्रकृति की हर एक चीज अपने में सम्पूर्ण है
मेरी हिन्दी भाषा भी अपने में सम्पूर्ण है
जो बोलते हैं वही लिखते हैं
मन के भाव सही उभरते हैं
न कुछ छुपाती न कुछ भुलाती
अभिव्यक्ति को पूर्ण बनाती है मेरी हिन्दी भाषा

कुछ हवा चली ऐसी यहाँ
मातृभाषा को छोड़ अंग्रेजी में हैं बतियाते
अपने आप को शिक्षित हैं बतलाते
पर जब दर्द होता है मां याद आती है।
चोट लगने पर मदर को छोड़ सब मां को हैं पुकारते

फिर क्यों मातृभाषा का तुम तिरस्कार करो
मातृभाषा में क्यों बदलाव करो
सभी भाषा के शब्दों को अपनाती है मेरी हिन्दी भाषा
हिन्द की जड़ों से जोड़ती है मेरी हिन्दी भाषा
भारत को विभिन्नता में एकता का
प्रतीक बनाती है मेरी हिन्दी भाषा
सबसे प्यारी और न्यारी है मेरी हिन्दी भाषा

* वरिष्ठ सहायक प्रबन्धक (लेखा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

आज मुझे एहसास हुआ!

*अरविंद सनत् कुमार

वर्षों बाद जब उम्र के
सत्तावन (57)वें पड़ाव पर
भरे–पूरे परिवार से, बाहर निकल कर!
मीलों–मील दूर चलकर।
अकेले – निपट अकेले,
रहने की मजबूरी आई!
तब कहीं जाकर किसी ने
दिलो – दिमाग में, घंटी बजाई।
आख़िर आज इतने
उदास क्यों हो भाई ?
क्या नहीं है कोई/सगे – संबंधी
तेरे आस – पास
इस नये अजनबी शहर में,
आखिर किससे लगा बैठे हो आस?
क्या तूने ले लिया है
गृहस्थ जीवन से सन्यास?
अरे, नहीं भाई! ये तो हमारे
''तबादले'' की मजबूरी है।
अब तो बच्चों के बच्चों को
भी देखना जरूरी है।
तभी तो हमारी ''मैडम''
अपने सकल समाज के साथ
अपने बच्चों के आस – पास है।
छुट्टी के दिन घर में अकेले
रहकर मुझे ''आज'' इस बात
का खास एहसास है कि–
''मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।''
समाज के बिना, ये जीवन बेमानी है।

* अधीक्षक, सैंट्रल वेअरहाउस–I, सांगली

निगम को कॉस्ट मैनेजमेंट में उत्कृष्टता के लिए राष्ट्रीय अवार्ड एवं एमओयू के लिए उत्कृष्ट रेटिंग

दिनांक 25 नवम्बर, 2014 को सार्वजनिक सेवा के बड़े क्षेत्रों की श्रेणी IX में वर्ष 2013 के लिए इन्स्टीच्यूट ऑफ कॉस्ट एकाउन्टेन्टस ऑफ इंडिया से कॉस्ट मैनेजमेंट में उत्कृष्टता हेतु माननीय वित्त राज्य मंत्री श्री जयंत सिन्हा से तृतीय राष्ट्रीय अवार्ड प्राप्त करते हुए निगम के प्रबंध निदेशक श्री हरप्रीत सिंह तथा निदेशक (वित्त) श्री वी.आर. गुप्ता।

निगम को वर्ष 2013–14 के लिए लोक उद्यम विभाग द्वारा समझौता ज्ञापन लक्ष्यों की उपलब्धियों पर उत्कृष्ट रेटिंग दी गई है। निगम को यह रेटिंग लगातार चौथी बार प्राप्त हुई है जो निगम के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए गौरव एवं प्रसन्नता की बात है।

बेंगलूरू में दिनांक 5–6 दिसम्बर, 2014 को आयोजित वेअरहाउस प्रबंधक सम्मेलन के अवसर पर उपस्थित निगम के प्रबंध निदेशक, बेंगलूरू तथा चेन्नई के क्षेत्रीय प्रबंधक तथा अन्य अधिकारीगण

बेंगलूरू में दिनांक 5–6 दिसम्बर, 2014 को आयोजित वेअरहाउस प्रबंधक सम्मेलन के अवसर पर निगम के प्रबंध निदेशक, बेंगलूरू तथा चेन्नई के क्षेत्रीय प्रबंधक एवं वेअरहाउस प्रबंधक चर्चा में भाग लेते हुए

सचित्र गतिविधियां

नेशनल एसोसिएशन ऑफ वेअरहाउसिंग कार्पोरेशन्स ऑफ इंडिया की वर्ष 2013–14 के लिए दिनांक 21.11.2014 को अमृतसर में आयोजित वार्षिक साधारण बैठक के अवसर पर एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. जे. एल्कजेंडर, निगम के अध्यक्ष डॉ. सी.वी. आनन्द बोस को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए

नेशनल एसोसिएशन ऑफ वेअरहाउसिंग कार्पोरेशन्स ऑफ इंडिया की वर्ष 2013–14 के लिए दिनांक 21.11.2014 को अमृतसर में आयोजित वार्षिक साधारण बैठक के अवसर पर प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए निगम के अध्यक्ष डॉ. सी.वी. आनन्द बोस

नेशनल एसोसिएशन ऑफ वेअरहाउसिंग कार्पोरेशन्स ऑफ इंडिया की वर्ष 2013–14 के लिए दिनांक 21.11.2014 को अमृतसर में आयोजित वार्षिक साधारण बैठक के अवसर पर एसोसिएशन के अध्यक्ष, निगम के अध्यक्ष तथा अन्य प्रतिभागी अधिकारीगण

माननीय उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री दिनांक 01.01.15 को सीएफएस, डिस्ट्री पार्क, नवी मुंबई का निरीक्षण करते हुए। साथ में हैं निगम के प्रबंध निदेशक एवं क्षेत्रीय प्रबंधक

निगमित कार्यालय में दिनांक 26 नवम्बर, 2014 को प्रबंधन प्रशिक्षुओं के लिए आयोजित एक दिवसीय प्रवेश प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान उपस्थित निगम के प्रबंध निदेशक, निदेशक (कार्मिक) तथा अन्य उच्च अधिकारीगण

निगमित कार्यालय में दिनांक 26 नवम्बर, 2014 को प्रबंधन प्रशिक्षुओं के लिए आयोजित एक दिवसीय प्रवेश प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान निगम के प्रबंध निदेशक, निदेशक (कार्मिक) तथा अन्य उच्च अधिकारियों के साथ प्रबंधन प्रशिक्षु

निगमित कार्यालय में दिनांक 16.10.2014 को आयोजित ''विश्व खाद्य दिवस'' के अवसर पर अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करते हुए निदेशक (कार्मिक)

निगमित कार्यालय में दिनांक 12 नवम्बर, 2014 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला के अवसर पर उपस्थित श्री शैलेश कुमार सिंह, संयुक्त निदेशक, इस्पात मंत्रालय एवं डॉ. हरीश कुमार सेठी, सहायक प्रोफेसर, इग्नू, नई दिल्ली

निगमित कार्यालय में दिनांक 12 नवम्बर, 2014 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला के अवसर पर उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण

क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित हिंदी कार्यशाला

क्षेत्रीय प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरू दिनांक 12.12.2014 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरू में आयोजित हिंदी कार्यशाला के अवसर पर अतिथि वक्ता व्याख्यान देते हुए

क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई में दिनांक 12.12.2014 को हिंदी कार्यशाला का शुभारंभ करते हुए हिंदी अनुवादक

क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई में हिंदी कार्यशाला के अवसर पर उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारी

क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद में दिनांक 20.12.2014 को आयोजित हिंदी कार्यशाला के अवसर पर अतिथि वक्ता व्याख्यान देते हुए

क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद में दिनांक 20.12.2014 को आयोजित हिंदी कार्यशाला का शुभारंभ करते हुए हिंदी अनुवादक

क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ में दिनांक 31.12.2014 को आयोजित हिंदी कार्यशाला के अवसर पर क्षेत्रीय प्रबंधक उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए

क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ में दिनांक 31.12.2014 को आयोजित हिंदी कार्यशाला के अवसर पर उपस्थित अधिकारी तथा कर्मचारीगण

सैंट्रल वेअरहाउस, वाशी में दिनांक 24.12.2014 को आयोजित हिंदी कार्यशाला को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्री के.एस. खान

क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल में दिनांक 31.12.2014 को आयोजित हिंदी कार्यशाला के अवसर पर व्याख्यान देते हुए मुख्य अतिथि डॉ. डी.के. त्यागी, सहायक निदेशक (राजभाषा), आयकर कार्यालय, भोपाल

क्षेत्रीय कार्यालय, पटना में दिनांक 29.12.2014 को आयोजित हिंदी कार्यशाला के अवसर पर क्षेत्रीय प्रबंधक उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए

सैंट्रल वेअरहाउस, उदयपुर में दिनांक 23–24 दिसम्बर, 2014 को आयोजित किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम में व्याख्यान देते हुए क्षेत्रीय प्रबंधक श्री निर्भय नारायण गुप्ता

टेबल टेनिस टूर्नामेंट का आयोजन

राजीव विनायक*

खेलों को जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान होता है। प्रबंधन वर्ग द्वारा खेल भावना को प्रोत्साहित करना अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मनोबल को बढ़ाना है। निगम अपनी विभिन्न गतिविधियों के साथ–साथ समय–समय पर खेलों को बढ़ावा देने के लिए अनेक आयोजन करता है। इन्हीं आयोजनों की एक श्रृंखला के रूप में निगम द्वारा पहली बार निगमित कार्यालय में टेबल टेनिस टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। इस टूर्नामेंट का उद्घाटन प्रबंध निदेशक श्री हरप्रीत सिंह द्वारा दिनांक 17.12.2014 को किया गया जिसमें निगम के लगभग 40 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इस टूर्नामेंट में पुरुष वर्ग से श्री आलोक कोहली विजेता तथा श्री गौरव दत्त उप विजेता रहे। इसी प्रकार महिला वर्ग में सुश्री इंदू रानी विजेता तथा श्रीमती शशि गुलाटी उप विजेता रही। इस टूर्नामेंट के विजेताओं और उपविजेताओं तथा रनरअप को महाप्रबंधक (क्रय) द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए।

* खेल सचिव, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

निगम का तुलनात्मक कार्य-निष्पादन

fnukd	{kerk ¼yk[k Vuk e½	{kerk mi;kx	ifr'krrk
01.11.2013	105.38	88.90	84
01.11.2014*	102.71	81.17	79
01.10.2014	102.83	81.12	79
01.12.2013	105.09	87.15	83
01.12.2014*	101.61	78.25	77
01.11.2014	102.70	78.43	76
01.01.2014	103.59	85.39	82
01.01.2015*	103.45	82.25	80
01.12.2014	102.62	77.85	76

*(अनंतिम)

अक्तूबर से दिसंबर, 2014 के दौरान आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

Øe- l-	dk;ZØe dk 'kh"kZd	dk;ZØe vofèk
1.	पैस्ट प्रबंधन एवं प्रधूमन पर लघु अवधि प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	07–21 अक्तूबर, 2014
2.	वित्त एवं कर प्रबंधन	27–29 अक्तूबर, 2014
3.	संविदा प्रबंधन	30–31 अक्तूबर, 2014
4.	152वाँ अखिल भारतीय वेअरहाउसिंग प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	5–15 नवम्बर, 2014
5.	नए भर्ती प्रबंधन प्रशिक्षुओं के लिए परिचय पाठ्यक्रम	10–21 नवम्बर, 2014
6.	मैनटोरिंग प्रौसेस	17 नवम्बर, 2014
7.	कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न से बचाव पर आधे दिन की कार्यशाला	17 नवम्बर, 2014
8.	डब्ल्यूडीआरए की ओर से वेअरहाउस प्रबंधन एवं वैज्ञानिक भंडारण पर प्रशिक्षण	24–28 नवम्बर, 2014
9.	एससी/एसटी/ओबीसी/पीसी कार्मिकों के लिए आरक्षण नीति	1–2 दिसम्बर, 2014
10.	पैस्ट प्रबंधन एवं प्रधूमन पर लघु अवधि प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	10–24 दिसम्बर, 2014
11.	एफसीआई कार्मिकों के लिए गुणवत्ता नियंत्रण	15–19 दिसम्बर, 2014

सेवानिवृत्ति के अवसर पर निगम परिवार अपने निम्नलिखित अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सुखद भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य एवं समृद्धि की कामना करता है।

¼igyh vDVwcj] 2014 ls 31 fnlEcj] 2014 dk nkSjku½

Ø- la-	uke	inuke	rSukrh LFkku	{ks=
1.	ए. गणेशन	अधिशासी अभि. (सिविल)	निर्माण सैल, चेन्नई	चेन्नई
2.	अनिल के. अरोड़ा	स.प्र. (लेखा)	क्षे.का., लखनऊ	लखनऊ
3.	डी. बुट्ची रेड्डी	एसआईओ	क्षे.का., हैदराबाद	हैदराबाद
4.	यू.सी. मठपाल	एसआईओ	कार्मिक विभाग	निगमित कार्यालय
5.	वी.एम.एस. प्रसाद	एसआईओ	चित्रदुर्गा	बेंगलूरू
6.	एस. सुकुमार	एसआईओ	कक्कानाड	कोच्चि
7.	एम. नातरामिल	एसआईओ	सीएफएस, माधवारम	चेन्नई
8.	नरोत्तम सिंह	एसआईओ	पीसीएस, मुम्बई	मुम्बई
9.	एस.आर. मिस्त्री	अधीक्षक	पिपवाव	अहमदाबाद
10.	राम सरण माथुर	अधीक्षक	क्षे.का. जयपुर	जयपुर
11.	देविन्द्र पाल	कनि. अधीक्षक	भटिंडा	चंडीगढ़
12.	जी.सी. श्रीवास्तव	कनि. अधीक्षक	आईसीडी, भदोही	लखनऊ
13.	के. सम्बाशिवम	तकनीकी सहायक	त्रिची	चेन्नई
14.	एम. बीम सिंह	वे.स.–I	क्रोमपेट	चेन्नई
15.	एम.आर.सी. पिल्लई	वे.स.–I	पिरावम रोड	कोच्चि
16.	के.वी. अगस्ती	डब्ल्यूसीपीओ	कुन्नमथानम	कोच्चि
17.	मथुरा दत्त उप्रेती	चौकीदार–I	एमआईएस विभाग	निगमित कार्यालय
18.	सी.के. परमेश्वरन	अधिशासी अभि. (सिविल)	कोयम्बटूर	चेन्नई
19.	एस.एन. शर्मा	व.स.प्र. (लेखा)	आईए विभाग	निगमित कार्यालय
20.	श्रीमती अन्नाम्मा थॉमस	लेखाकार	एनएसईजेड, नोएडा	दिल्ली
21.	विनोद कुमार गुप्ता	एसआईओ	ओखला–II	दिल्ली
22.	अमित्वा वैद्य	एसआईओ	सीएफएस, द्रोणगिरी नोड	नवी मुम्बई
23.	केशव लाल हेमराजनी	अधीक्षक	मुरैना–II	भोपाल
24.	किशोर प्रसाद	अधीक्षक	लखनऊ–I	लखनऊ
25.	लालजी सिंह	अधीक्षक	शाहजहांपुर	लखनऊ
26.	एच.एम. रवेरकर	अधीक्षक	क्षे.का. भोपाल	भोपाल
27.	बाला कृष्णन आर	अधीक्षक	सीआरडब्ल्यूसी, कुंडल नगर	चेन्नई
28.	टी.एस. यादव	क. अधीक्षक	बीएण्डसी विभाग	निगमित कार्यालय
29.	उम्मेद सिंह	क. अधीक्षक	श्रीनगर (गढवाल)	लखनऊ
30.	प्रहलाद सिंह	क. अधीक्षक	कोटा–II	जयपुर
31.	श्रीमती ए.सी. सोभना	क. अधीक्षक	कोझीकोड	कोच्चि
32.	श्रीपाल	वे.स.–I	सफदरजंग फ्लाईओवर	दिल्ली
33.	जे.बी. गोहिल	वे.स.–I	वडोद	अहमदाबाद
34.	एस.सी. गुप्ता	उ.म.प्र. (तकनीकी)	सतर्कता विभाग	निगमित कार्यालय
35.	विनीत निगम	व.स.प्र. (सामान्य)	सीएफएस, द्रोणागिरी नोड	नवी मुम्बई
36.	जी.एस. त्रिपाठी	व.स.प्र. (सामान्य)	प्रोजेक्ट विभाग	निगमित कार्यालय

Ø- l-	uke	inuke	rSukrh LFkku	{ks=
37.	पी.सी. लोहनी	व.स.प्र. (सामान्य)	सीएफएस, डी पार्क	नवी मुम्बई
38.	श्रीमती गिरिजा कुट्टन	नि. सचिव	एमआईएस विभाग	निगमित कार्यालय
39.	वी.एस. वरदाचारी	एसआईओ	क्षे.का. चेन्नई	चेन्नई
40.	रूपक शाह	एसआईओ	अगरतला (एच)	गुवाहाटी
41.	सुश्री हिरु एम वजिरानी	अधीक्षक	क्षे.का. अहमदाबाद	अहमदाबाद
42.	बी.बी. सिंह	अधीक्षक	कोटा–II	जयपुर
43.	बी.आर. अमरुतिया	अधीक्षक	राजकोट–I	अहमदाबाद
44.	राम प्रसाद	अधीक्षक	गोलागोकरणनाथ	लखनऊ
45.	मुनीब प्रसाद	अधीक्षक	सिरसा	पंचकुला
46.	गिरीश कुमार श्रीवास्तव	अधीक्षक	किशनगंज	पटना
47.	हरपाल सिंह	कनि. अधीक्षक	नरवाना	पंचकुला
48.	एम. राम ब्रह्मम	कनि. अधीक्षक	क्षे.का. हैदराबाद	हैदराबाद
49.	कुलविन्दर सिंह ढल	कनि. अधीक्षक	मंडी गोविन्दगढ़	चंडीगढ़
50.	ए.के. गुप्ता	कनि. अधीक्षक	बिजनौर	लखनऊ
51.	रघुबीर सिंह	कनि. अधीक्षक	आरपी बाग	दिल्ली
52.	स्वामी दयाल	कनि. अधीक्षक	शाहगंज	लखनऊ
53.	राम बिलास गुप्ता	कनि. अधीक्षक	बहराइच	लखनऊ
54.	अमृता लाल बाग	वे.स.–I	उल्बेरिया	कोलकाता
55.	श्रीमती एस.ए. मासोन	वे.स.–I	यवतमाल	मुम्बई
56.	महावीर प्रसाद	वे.स.–I	दरभंगा	पटना
57.	हंस राज	वे.स.–I	पठानकोट	चंडीगढ़

रचनाकार कृपया ध्यान दें !

1- Ñi;k if=dk esa izdk'ku ds fy, ys[k lhèks fuxfer dk;kZy; ds jktHkk"kk vuqHkkx ds esy % rajbhasha.cwc@gmail.com ij ;k Mkd }kjk HkstsaA
2- ys[k ds lkFk bl vk'k; dh ?kks"k.kk gksuh pkfg, fd ;g ys[k@jpuk ys[kd dh ekSfyd jpuk gSA
3- ;fn fdlh dkj.ko'k ys[k@jpuk dks if=dk esa 'kkfey djuk lEHko u gqvk rks mls ykSVk;k ugha tk,xkA
4- jpuk,a Hkstrs le; Ñi;k bl ckr dk [;ky j[ksa fd og Lrjh; gksa rFkk lekt] lkfgR; ,oa laLÑfr ls tqMh gbZ gksaA
5- Hk.Mkj.k ls lacaf/kr jpukvksa dks izkFkfedrk nh tk,xhA izdkf'kr jpukvksa ij ikfjJfed@ekuns; inku fd;k tkrk gSA
6- fuxe ds lsokfuoÙk vf/kdkjh@deZpkjh Hkh viuh jpuk,a izdk'kukFkZ Hkst ldrs gSaA ;fn os if=dk i<uk esa #fp j[krs gksa rks viuk irk bl dk;kZy; dks Hkst nsa] rkfd mUgsa if=dk Hksth tk ldsA
7- vki viuh jpuk,a fuEufyf[kr irs ij Hkst ldrs gS&

izca/kd ¼jktHkk"kk½
dsUnzh; Hk.Mkj.k fuxe] fuxfer dk;kZy;]
4@1] lhjh baLVhP;w'kuy ,fj;k] vxLr ÑkfUr ekxZ] gkSt [kkl]
ubZ fnYyh&110 016

निगम अपने ग्राहकों के उज्ज्वल एवं समृद्ध भविष्य के लिए समर्पित

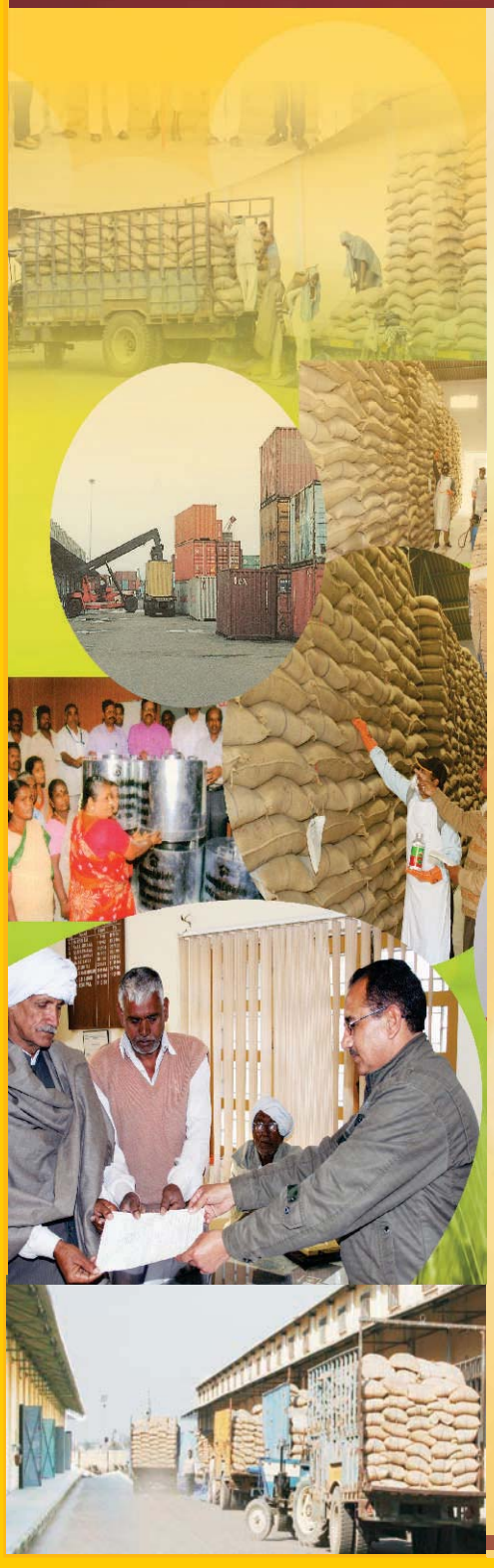

- केन्द्रीय भण्डारण निगम, भारत सरकार का अनुसूची–'क' मिनी रत्न श्रेणी उपक्रम।
- पूरे देश मे 10.30 मिलियन मी0 टन क्षमता के 467 वेअरहाउसों का नेटवर्क।
- खाद्यान्न, बीज, उर्वरकों आदि सहित 400 से भी अधिक वस्तुओं के लिए वैज्ञानिक भण्डारण की सुविधाएँ प्रदान करना।
- वेअरहाउस रसीद को गिरवी रख कर किसानों को ऋण सुविधा के लिए सहायता प्रदान करना।
- जमाकर्ताओं द्वारा आवश्यकता पड़ने पर रख–रखाव एवं परिवहन सुविधाओं की व्यवस्था करना।
- लाखों निर्यातकों तथा आयातकों के लिए 31 कंटेनर फ्रेट स्टेशन/अंतर्देशीय क्लिअरेंस डिपुओं का परिचालन।
- ग्राहकों के परिसरों में पैस्ट नियंत्रण सेवा उपलब्ध कराना।
- बन्दरगाहों तथा अंतर्देशीय स्टेशनों पर अपने 57 बांडेड वेअरहाउसों में बांडेड वेअरहाउसिंग सुविधाएँ प्रदान करना।
- लोनी तथा गेटवे बंदरगाहों के बीच कंटेनर रेलगाड़ियों का परिचालन।
- एकीकृत चैक पोस्ट टर्मिनल–आयात–निर्यात व्यापार के लिए सड़क मार्ग के माध्यम से भारत–बंगलादेश सीमा पर पैट्रापोल तथा भारत–पाकिस्तान सीमा पर अटारी में ट्रक परिचालन।

ISO 9001:2008 | ISO 14001:2004 | OHSAS 18001:2007
TÜVRheinland CERTIFIED
01 100 1328128 | 01 104 1328128 | 01 113 1328128

केन्द्रीय भण्डारण निगम

(भारत सरकार का उपक्रम)

कॉरपोरेट कार्यालय:
4/1, सीरी इंस्टीट्यूशनल एरिया, अगस्त क्रांति मार्ग, (खेल गांव मार्ग),
हौजखास, नई दिल्ली-110 016
टेलीफोन नं०: 26566107, 26967712 फैक्स: 26518031, 26967712
E-mail: warehouse@nic.in website: www.cewacor.nic.in

क्षेत्रीय कार्यालय:
अहमदाबाद, बंगलौर, भोपाल, भुवनेश्वर,
चण्डीगढ़, चेन्नई, दिल्ली, गुवाहाटी, हैदराबाद,
जयपुर, कोच्चि, कोलकाता, लखनऊ, मुम्बई,
नवी मुम्बई, पंचकुला, पटना, रायपुर.

केन्द्रीय भण्डारण निगम

(भारत सरकार का उपक्रम)

4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रांति मार्ग, हौज खास,
नई दिल्ली-110 016